

हसती दुनिया

★ वर्ष 46

★ अंक 1

★ जनवरी 2019

₹15/-





हँसती दुनिया

• वर्ष 46 • अंक 1 • जनवरी 2019 • पृष्ठ 52
बच्चों के बौद्धिक विकास की अनुठी पत्रिका
(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : सी. एल. गुलाटी
ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली-9
हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी-220 फेस-II,
नोएडा-201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कांलोनी,
दिल्ली-09 से प्रकाशित किया।

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक सहायक सम्पादक
विमलेश आहूजा सुभाष चन्द्र

Ph.: 011-47660200

Fax: 01127608215

Email: editorial@nirankari.org

Website: <http://www.nirankari.org>

सदस्यता शुल्क

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£15	£40	£70	£150
यूरोप	€20	€55	€95	€200
अमेरिका	\$25	\$70	\$120	\$250
कनाडा/ऑस्ट्रेलिया	\$30	\$85	\$140	\$300

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।



स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
7. अनमोल वचन
16. समाचार
38. कभी न भूलो
44. पढ़ो और हँसो
49. रंग भरो
50. आपके पत्र मिले

चित्रकथाएं

12. दादा जी
34. किट्टी



विशेष/लेख

6. हमारे राष्ट्रीय प्रतीक
: विद्या प्रकाश
8. सफरनामा राष्ट्रीय ध्वज का
: कैलाश जैन
21. मछली नहीं ह्वेल
: किरण बाला
22. भालू
: डॉ. परशुराम शुक्ल
28. उनकी लेखनी ने
: ईलू रानी
29. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
: घमंडीलाल अग्रवाल
30. मैना
: किरण बाला
32. हरा धनिया
: कैलाश जैन एडवोकेट
43. जेब्रा
: डॉ. विनोद गुप्ता

कहानियां

10. सबक
: मनीपाल सिंह
18. सहृदय चिकित्सक
: सत्येन्द्र त्रिवेदी
19. वह मूर्ख रह गया
: शिवनारायण सिंह
23. कछुआ जीत गया
: जसविन्दर शर्मा
26. शुक्रिया अदा करो
: डॉ. सेवा नन्दवाल
31. भला-बुरा
: राधेलाल 'नवचक्र'
40. अब वह ऐसा नहीं करेगा
: डॉ. देशबन्धु 'शाहजहाँपुरी'

कविताएं

11. दो बालगीत
: राजेंद्र निशेश
17. दो बाल कविताएं
: महेन्द्र सिंह शेखावत
25. दो बाल कविताएं
: हरजीत निषाद
39. ठंड की रानी
: कमलसिंह चौहान
39. सर्दी आई
: अब्दुल मलिक खान
46. दो बाल क्षणिकाएं
: राजेंद्र निशेश
47. गणतंत्र दिवस
: मोती 'विमल'

सबसे पहले

नववर्ष की शुभकामनाएं



नववर्ष, हर वर्ष अपने निश्चित समय पर आकर हम सभी को नयी स्फूर्ति, उमंग और उत्साह से भर देता है। इस दिन की सभी को उत्सुकता से प्रतीक्षा भी होती है और सभी एक-दूसरे को शुभकामनाएं भी देते हैं जिसमें दूसरे के स्वास्थ्य की कामना, समृद्धि की कामना, लाभ-यश की कामना, खुशहाली, प्रेम और प्रभु-कृपा के आशीर्वाद की कामना की जाती है। इन सबके साथ-साथ हम हर वर्ष अपने लिए भी एक प्रतिज्ञा या संकल्प करते हैं जिससे हमारा आने वाला वर्ष जहाँ सबके मंगल की कामना से युक्त हो वहीं सुखदायी एवं मंगलमयी बीते।

इस वर्ष भी हम इसी तरह सभी को शुभकामनाएं देंगे और हमें भी हमारे परिचित, मित्र, भाई-बन्धु, सहयोगी, सहपाठी आदि शुभकामनाएं देंगे; फिर हम भी एक नई प्रतिज्ञा या संकल्प के साथ नववर्ष को आरम्भ करेंगे। इस तरह हमने अनेकों बार, अनेकों वर्षों से इसको एक कार्य की तरह करते रहे हैं और कर भी रहे हैं।

साथियों! इस वर्ष किसी को शुभकामना देने और नया संकल्प लेने से पहले बीते वर्ष में किए हुए अपने संकल्प एवं सभी को दी हुई शुभकामनाओं का

सूक्ष्म अवलोकन अवश्य करें। जिस किसी के लिए भी हमने समृद्धि की कामना की, उसको समृद्धि प्राप्त होने पर मुझे खुशी हुई या नहीं। किसी को लाभ एवं यश मिला तो मेरे अन्तरमन में क्या प्रतिक्रिया हुई। इसी तरह किसी को प्रेम एवं खुशहाली प्राप्त हुई तो मैंने उसे प्रभु का आशीर्वाद समझा या नहीं और जो भी मैंने संकल्प लिया उसे मैंने प्रतिदिन पूर्ण करने का प्रयास किया या नहीं आदि-आदि क्योंकि नववर्ष अपने आप में केवल 365 दिन का योग (जोड़) है और हर दिन में 24 घंटे होते हैं फिर हर घंटे में 60 मिनट होते हैं और एक मिनट में 60 सेकेण्ड। इस तरह अगर हमारा हर मिनट, हर पल, हर क्षण सभी की खुशहाली, यश, लाभ, समृद्धि की शुभ भावना में बीता है तो हम सौभाग्यशाली हैं क्योंकि जो भी मैंने दूसरे के लिए सोचा है वह मेरी विचारधारा का प्रतिफल है और मेरा कल्याण स्वतः हो जाएगा क्योंकि जैसा मैंने बीज बोया है मेरी फसल भी वैसी ही होगी।

प्यारे साथियों! हम सभी अपने अन्तःकरण से मानव के उत्थान, विकास एवं कल्याण की कामना करें। यह कामना परमात्मा की प्रार्थना और हमारी शुभ भावना से युक्त हो। शुभकामनाएं सार्थक होती हैं यदि हमारे भाव निर्मल हों और इसमें सर्वमंगल की कामना निहित हो। नववर्ष में हम यही कामना करें कि सभी स्वस्थ रहें, खुशहाल रहें, शान्ति से रहें और अपने-अपने कर्तव्य का पालन अवश्य करें। हँसती दुनिया परिवार की ओर से समस्त विश्व को नववर्ष की हृदय से शुभकामनाएं।

—विमलेश आहूजा

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या : 177

वर्षा बरसे राह पई रोके झखड़ उड उड आंदे ने।
रात डराउणी टिब्बे टोये कदम थिड़कदे जांदे ने।
बदलां दी आवाज़ गरजदी जीव जन्त घबरांदे ने।
कदम कदम ते लीडे भिज्जण पाणी जोर विखांदे ने।
गुरसिख मिलण लई सतगुरु नूं पर्वत वी टप जांदे ने।
झखड़ मीह नूं कुझ न समझण अगगे पैर वधांदे ने।
तली ते रख के सिर नूं अपने गली गुरु दी वड़दे ने।
कहे अवतार गुरु दे प्यारे मौत नाल वी लड़दे ने।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि गुरु और गुरसिख का प्रेम बहुत ऊँचा और निराला है। गुरसिख अपने सद्गुरु से मिलने के लिए बड़ी से बड़ी बाधा को भी पार करके सद्गुरु के पास पहुँच जाता है। गुरु से मिलने की गुरसिख की इच्छा इतनी तीव्र होती है कि वह किसी भी मुश्किल की परवाह किए बिना आगे बढ़ता जाता है। भीषण बरसात हो रही हो, तेज आँधी-तूफान के झोंके आकर रास्ता रोकते हों फिर भी गुरसिख गुरु से मिलने के लिए आगे बढ़ता जाता है। ऐसे में राह के छोटे-बड़े गड्ढों के कारण रात भले ही डरावनी लग रही हो, भले ही उसके पैर लड़खड़ा जाते हों फिर भी गुरसिख आगे बढ़ना बंद नहीं करता। घने काले बादलों से कड़कती बिजली की आवाज भले ही कितनी तेज गर्जना कर रही हो जिसके कारण सभी जीव-जन्तु भी घबरा रहे हों लेकिन गुरसिख इन सबकी परवाह किए बिना गुरु से मिलने के लिए आगे बढ़ता जाता है। तेज बरसात के कारण भले ही उसके कपड़े पूरी तरह भीग चुके हों फिर भी गुरसिख इन बाधाओं को पार करता आगे बढ़ता जाता है। वह

सामने आए पर्वतों को भी लांघ जाता है। वह बरसात और आँधी तूफान को कुछ न समझते हुए आगे कदम बढ़ाता जाता है।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि गुरु के प्रति गुरसिख का प्यार इतना अधिक होता है कि गुरु के प्यारे गुरु की गली में अपना शीश हथेली पर रखकर आगे बढ़ते जाते हैं अर्थात् वे किसी भी बाधा या मुश्किल से नहीं घबराते यहाँ तक कि मौत के साथ युद्ध लड़ते हुए आगे बढ़ते जाते हैं। वास्तविकता में गुरु और गुरसिख के बीच जो आत्मिक प्यार होता है उसके कारण गुरसिख हर मुश्किल का सामना करते हुए अपने सद्गुरु के पास पहुँच जाता है। सद्गुरु भी ऐसे गुरसिख की हर प्रकार से रक्षा करते हैं। यह प्यार गुरु और गुरसिख दोनों तरफ से होता है जिसका आधार अध्यात्म होता है।

बाबा अवतार सिंह जी इस पद के द्वारा यह स्पष्ट कर रहे हैं कि गुरु और गुरसिख का प्रेम कितना गहरा और अपनेपन से भरा हुआ है जो सांसारिक मुश्किलें तो दूर मृत्यु से भी भयभीत नहीं होता।

हमारे राष्ट्रीय प्रतीक

राष्ट्रीय गान
जन गण मन

राष्ट्रीय गीत
वन्दे मातरम्

राष्ट्रीय वाक्य
सत्यमेव जयते



राष्ट्रीय ध्वज
तिरंगा



राष्ट्रीय पशु
बाघ



राष्ट्रीय पुरस्कार
भारत रत्न



राष्ट्रीय चिन्ह
अशोक स्तम्भ



राष्ट्रीय खेल
हॉकी



राष्ट्रीय पुष्प
कमल



राष्ट्रीय मुद्रा
रुपया



राष्ट्रीय पक्षी
मोर



राष्ट्रीय मिठाई
जलेबी



राष्ट्रीय फल
आम



राष्ट्रीय नदी
गंगा

राष्ट्रीय पर्व

26 जनवरी
गणतंत्र दिवस

15 अगस्त
स्वतंत्रता दिवस

2 अक्टूबर
गाँधी जयन्ती

अनमोल वचन

संग्रहकर्ता : सौरभ कुमार (माधौगंज), राहुल (बराड़ा)

- ★ विद्या धन से बढ़कर कोई धन नहीं है।
- ★ जितना हो सके रोज ईश्वर को नमन करो और अपनी जिन्दगी में भक्ति का रस भरो।
- ★ सुबह उठते वक्त दो मिनट ईश्वर (निरंकार) का स्मरण करना सीखो क्योंकि सुबह ईश्वर का जो नाम लेता है उसका पूरा दिन शान्ति से गुजरता है।
- ★ हो सके तो आपस में भाईचारा बढ़ाओ और एक साथ मिलकर देश को महान बनाओ।
- ★ किसी को बुरा-भला कहने से पहले अपने मन से पूछो कि जो यह हो रहा है वह सही है या गलत।
- ★ शिक्षा मनुष्य के भीतर निहित पूर्णता के विकास का नाम है।
- ★ गुण सब स्थानों पर आदर प्राप्त कर लेता है।
- ★ वही उन्नति कर सकता है जो स्वयं को उपदेश देता है।
- ★ अपनी विद्वता पर गर्व करना, सबसे बड़ा अज्ञान है।
- ★ उम्र किसी को बड़ा नहीं बनाती बल्कि गुणों के अनुभव से ही आदमी की पहचान बनती है।
- ★ मुँह से निकली बात सिर्फ दूसरों के कानों तक रह जाती है लेकिन दिल से निकली बात दूसरों को गहराई से सोचने पर मजबूर कर देती है।
- ★ अधिक धन होने पर भी जो चिन्तित है वह सबसे बड़ा निर्धन है। कम धन रहने पर भी जो सन्तुष्ट रहता है। वही सबसे बड़ा धनी है।
- ★ बीती बात के लिए शोक तथा भविष्य के लिए निरर्थक चिन्ता न करके वर्तमान के लिए प्रयत्नशील रहने वाला ही ज्ञानी है।
- ★ सफल इन्सान बनने की कोशिश करने की बजाए सिद्धान्तों वाला इन्सान बनने की कोशिश कीजिए।
- ★ ज्ञान से बढ़कर कोई दौलत नहीं है।
- ★ माता-पिता कभी सन्तान का बुरा नहीं चाहते इसलिए उनके इरादों की कद्र करनी चाहिए।
- ★ यदि तुम अच्छे रास्ते पर हो तो संसार की बड़ी से बड़ी शक्ति तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकती।
- ★ किसी भी लक्ष्य को निर्धारित करने से पूर्व अपनी योग्यता, कार्यक्षमता व समय अवधि को सुनिश्चित कर लें।
- ★ अपनी योग्यता को निरंतर विकसित करें।
- ★ सोच-समझकर बोलें, आपका वार्तालाप आपकी छवि बनाने और बिगाड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- ★ समय की पाबन्दी और उसका सदुपयोग जीवन में सफलता प्राप्ति का सशक्त माध्यम है।
- ★ जो दूसरों के लिए जीते हैं वे ही वास्तव में जीवित हैं।
- ★ महापुरुषों की शिक्षाओं को हम जीवन में अपनाएं तो हमारे विचार सुन्दर बनेंगे तब हम सुख और प्रसन्नता महसूस करेंगे।
- ★ अगर हम किसी के रास्ते में फूल नहीं बिछा सकते तो काँटे भी नहीं बिछाने चाहिए।

सफरनामा राष्ट्रीय ध्वज का

किसी भी देश का राष्ट्रीय ध्वज महज एक कपड़े का टुकड़ा नहीं होता, वरन वह उस मुल्क के नागरिकों, देश की संस्कृति और सांस्कृतिक परम्पराओं और समूची वतनपरस्ती व अस्मिता का केन्द्र बिन्दु हुआ करता है। दुनिया का इतिहास गवाह है कि राष्ट्रीय ध्वज के सम्मान की रक्षा के लिए देशभक्तों ने अपने प्राणों की आहुति हँसते-हँसते दी है। आज भी कोई वतनपरस्त आदमी अपने देश के झंडे का अपमान बर्दाश्त नहीं कर सकता।

राष्ट्रीय झंडा राष्ट्र की स्वतंत्रता और स्वाभिमान का जीवन्त प्रतीक माना जाता है। हर ध्वज के प्रतीकात्मक अर्थों की पृष्ठभूमि में परम्पराओं का एक लम्बा इतिहास छिपा होता है। हमारा वर्तमान तिरंगा राष्ट्रीय अभिव्यक्ति है। यह झंडा स्वाधीनता संग्राम के उन अमर शहीदों की अनमोल यादगार है, जिन्होंने देश की आजादी के लिए संघर्ष करते हुए अपना सम्पूर्ण जीवन होम कर दिया।

हमारे राष्ट्रीय झंडे के विकास का इतिहास स्वतंत्रता-संग्राम की कुर्बानियों का इतिहास है। ज्ञात इतिहास के अनुसार, प्रथम राष्ट्रीय ध्वज पारसी बागान स्क्वेयर (ग्रीन पार्क) कलकत्ता में फहराया गया। इस राष्ट्रीय झंडे में क्रमशः केसरिया, पीले तथा हरे रंग की तीन पट्टियाँ थीं। केसरिया पट्टी में भारत के तात्कालीन आठ राज्यों के प्रतीक के रूप में आठ कमल बने हुए थे। बीच की पीली पट्टी में देवनागरी लिपि में एक तरफ 'वंदेमातरम' लिखा हुआ था और नीचे वाली हरी पट्टी में एक ओर सूर्य और दूसरी ओर चन्द्रमा को चित्रित किया गया था। इसके पश्चात् सन् 1907 में मादाम कामा और उनके प्रवासी क्रांतिकारियों के सहयोग से जर्मनी की राजधानी बर्लिन में राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया। 18 अगस्त, 1907 में हुई इस ध्वजारोहण सभा में श्रीमती कामा ने आजादी के संग्राम का प्रथम ध्वज घोषित करते हुए लोगों से इसके अभिवादन की अपील की।

इसके पश्चात् सन् 1917 में लोकमान्य तिलक तथा एनी बेसेंट ने होम-रूल के तहत एक और ध्वज बनाया, इसमें पांच लाल व चार हरे रंग की पट्टियाँ थीं। इसके मध्य में सात सितारे बने हुए थे। दाहिनी ओर अर्द्धचन्द्र के साथ एक सितारा था और बाएं कोने में इंग्लैंड का राष्ट्रीय ध्वज 'यूनियन जैक' बना हुआ था। राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम के नेताओं ने 'यूनियन जैक' बने होने के कारण इस झंडे को मान्यता नहीं दी तथा कांग्रेस के विजयवाड़ा सम्मेलन में इसे पूर्ण रूप से अस्वीकार कर दिया गया। सन् 1921 में लाला हंसराज ने लाल व हरे रंग की पट्टियों वाला ध्वज बनाया। इसमें लाल रंग की पट्टी हिन्दुओं तथा हरी पट्टी मुसलमानों का प्रतीक थी। बाद में महात्मा गाँधी ने सुझाव दिया कि देश में अन्य जातियों के लोग भी रहते हैं। अतएव शेष जातियों के प्रतिनिधित्व के रूप में झंडे में सबसे ऊपर सफेद रंग की पट्टी और जोड़ी गई। इसके बीच में सादगी के प्रतीक के रूप में चरखे का चिन्ह अंकित किया गया। इस झंडे को पहली बार राष्ट्रीय ध्वज के रूप में मान्यता मिली। सन् 1921 में कांग्रेस के अहमदाबाद अधिवेशन में इस झंडे को फहराया गया।

सन् 1931 में कांग्रेस कार्यसमिति ने कराची सम्मेलन में एक प्रस्ताव पारित कर राष्ट्रीय झंडे के निर्माण हेतु एक सात सदस्यीय समिति नियुक्त की गई। इस समिति ने कई सुझाव दिए लेकिन किन्हीं कारणों से उन्हें स्वीकार नहीं किया गया।

सन् 1933 में वर्तमान राष्ट्रीय ध्वज का मौलिक स्वरूप अस्तित्व में आया। इस झंडे में सबसे ऊपर शौर्य व त्याग के प्रतीक के रूप में केसरिया पट्टी, बीच में शांति, अहिंसा व प्रेम के प्रतीक के रूप में

सफेद पट्टी और अन्त में समृद्धि, सम्पन्नता तथा पारस्परिक विश्वास के प्रतीक के रूप में हरी पट्टी का समावेश किया गया। इस झंडे की सफेद पट्टी पर गहरे नीले रंग से चरखे का चिन्ह अंकित किया गया। कांग्रेस द्वारा मान्यता प्राप्त यह झंडा सन् 1947 में आजादी से पूर्व तक राष्ट्रीय ध्वज बना रहा। सभी राष्ट्रीय अवसरों पर इसे फहराया जाता रहा।

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व संविधान सभा द्वारा 23 जून, 1947 को राष्ट्रीय झंडे पर विचार करने हेतु 'राष्ट्र ध्वज समिति' गठित की गई। समिति की सिफारिश पर राष्ट्रीय ध्वज में चरखे के स्थान पर अशोक चक्र अंकित कर भारत के राष्ट्रीय झंडे के रूप में इसे स्वीकार कर लिया गया।

चरखे के स्थान पर अशोक चक्र अंकित क्यों किया गया, इस सम्बन्ध में भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने स्थिति को स्पष्ट करते हुए कहा था— "ध्वज पर चरखा इस प्रकार अंकित रहता था कि एक सिरे पर पहिया व दूसरे सिरे पर तक्का रहता था। यदि झंडे को दूसरी ओर से देखा जाए तो पहिये पलट जाते थे। इसी व्यावहारिक कठिनाई के कारण ध्वज पर चरखे के स्थान पर चक्र का चिन्ह अंकित करने का निर्णय लिया गया।"

हमारे राष्ट्रीय ध्वज की तीनों आड़ी पट्टियों की लम्बाई, चौड़ाई बराबर होती है। ध्वज की लम्बाई-चौड़ाई का अनुपात 3 : 2 का होना चाहिए। बीच की सफेद पट्टी में उसकी पूरी चौड़ाई में गहरे नीले रंग का अशोक चक्र अंकित किया जाता है। इस चक्र में चौबीस धारियां होती हैं।

राष्ट्रीय अवसरों पर सूर्योदय के बाद किसी भी समय राष्ट्रीय झंडा फहराया जा सकता है लेकिन सूर्यास्त से पूर्व उसे उतारना आवश्यक है। झंडे का दंड सीधा रहना और केसरिया पट्टी का ऊपरी सिरे पर होना जरूरी है। राष्ट्रीय



ध्वज के पास किसी अन्य झंडे को उसके दाहिनी ओर लगाना चाहिए तथा उसकी ऊँचाई राष्ट्रीय ध्वज से कम होनी चाहिए। गंदा या फटा हुआ राष्ट्रीय ध्वज नहीं फहराया जाना चाहिए। राष्ट्रीय शोक के अलावा अन्य किसी भी अवसर पर राष्ट्रीय झंडा झुका हुआ नहीं होना चाहिए।

झंडे को फहराते समय उसे तेजी से ऊपर की ओर ले जाना चाहिए जबकि उतारते समय धीरे-धीरे उतारा जाना चाहिए। जुलूस आदि में चलने पर राष्ट्रीय ध्वज को दाहिने कंधे पर रखकर सबसे आगे चलना चाहिए। राष्ट्रीय अवसरों पर ध्वजारोहण के समय सावधान की मुद्रा में खड़े होकर ध्वज का अभिवादन करना चाहिए। राष्ट्रीय ध्वज का सजावटी कपड़े की तरह इस्तेमाल करना न केवल राष्ट्र का अपमान है बल्कि यह दंडनीय अपराध भी है।

राष्ट्रीय ध्वज हमारे आत्म-गौरव का प्रतीक है, हर हालत में और हर कीमत पर राष्ट्रीय ध्वज का पूर्ण सम्मान करना हम सभी देशवासियों का अनिवार्य कर्तव्य है। हजारों देशभक्तों के बलिदान के बाद हम एक स्वतंत्र राष्ट्र के नागरिक के रूप में यह तिरंगा झंडा हासिल कर पाए हैं, इस झंडे के सम्मान का प्रश्न समूचे राष्ट्र के अस्तित्व व अस्मिता से जुड़ा हुआ है।

सबक

—आखिर तुम हो तो मूर्ख बिल्लियां ही। अपनी परदादियों से तुमने क्या सीखा?— बिल्लू बन्दर ने चिंकी बिल्ली को चिढ़ाते हुए कहा।

—हमारे परदादे ने तुम्हारी जाति की मूर्ख बिल्लियों को बेवकूफ बनाकर पूरी रोटी हजम कर ली थी।— वह बोला।

चिंकी बिल्ली गुस्से से पैर पटकते हुए घर पहुँची। वह बड़बड़ाते हुए बोली— आखिर इन बन्दरों ने हमें समझ क्या रखा है?

—तुम ठीक कहती हो बहन। हम इन बन्दरों को अवश्य मजा चखाएंगे।— यह दूसरी आवाज थी। चिंकी बिल्ली ने पलटकर देखा तो उसके सामने शहर से आई उसकी चचेरी बहन पिंकी थी। दोनों एक-दूसरे के गले मिली। वह बोली— मैंने तुम्हारी सारी बातचीत सुन ली है। अपने पुरखों की गलती हम क्यों झेलें। इतना कहकर पिंकी बिल्ली ने उसके कान में अपनी योजना सुनाई।

अगले दिन दोनों बहनें जंगल के बीचो-बीच जाकर लड़ने लगीं। शोर सुनकर बिल्लू बन्दर वहाँ आ

पहुँचा। उसने उनके झगड़े का कारण पूछा।— पिंकी बिल्ली कहने लगी— हम यहाँ टहलने के लिये आई हैं। यहाँ एक केक पड़ा हुआ था। मैंने जैसे ही केक को उठाया, यह मुझसे झगड़ने लगी और कहने लगी कि यह केक मेरा है।

—अब तुम ही हमारा फ़ैसला करो न बन्दर भाई।— चिंकी बोली।

केक को देखकर बिल्लू बन्दर के मुँह में पानी भर आया। बिल्लू बन्दर को मन ही मन उनकी मूर्खता पर हँसी आ रही थी। उसने केक को दो टुकड़ों में विभाजित कर दिया। एक टुकड़ा बड़ा था और एक छोटा। उसने अलग-अलग टुकड़े दोनों बिल्लियों को दे दिया।

—बन्दर भाई हमें बराबर के टुकड़े चाहिए। क्यों चिंकी बहन?— पिंकी बोली।

—हाँ, हाँ हमें बराबर के टुकड़े चाहिए।— चिंकी बोली। यह सुनकर बिल्लू ने केक के बड़े टुकड़े का एक और टुकड़ा कर दिया और उसे इत्मीनान से अपने मुँह में रख लिया। लेकिन यह क्या? उसका जबड़ा टस से मस न हुआ। उसने अपनी पूरी शक्ति से जबड़े को हिलाना चाहा। इसी कोशिश में उसके सभी दांत टूट गये। वह नदी की ओर भागा। पीछे से चिंकी और पिंकी के हँसने की आवाजें आईं। असल में पिंकी बिल्ली ने उस केक में शहर से लाई एक खास दवा डाल रखी थी। तीन-चार दिन बाद जब बिल्लू बन्दर ने अपनी शक्ल आईने में देखी तो वह अपने आपको पहचान न सका। इस घटना के बाद बिल्लू बन्दर ने किसी बिल्ली को नहीं चिढ़ाया।



नये वर्ष में

नये वर्ष में
कुछ नूतन हो
संकल्प हमारे।
पढ़ना, लिखना
अच्छा बनना,
मिलकर रहना
कभी न लड़ना।
सच की पूजा
करते रहना,
झरने सा
हम को है बहना।



नये वर्ष में
सब पूर्ण हो
संकल्प हमारे।
गलत राह पर
तनिक न चलना,
आये विपदा
उससे भिड़ना।
नेक इरादे
फलने वाले
रवि किरणों सा
तम से लड़ना।
नये वर्ष में
नभ को छू लें
संकल्प हमारे।



सर्दी रानी

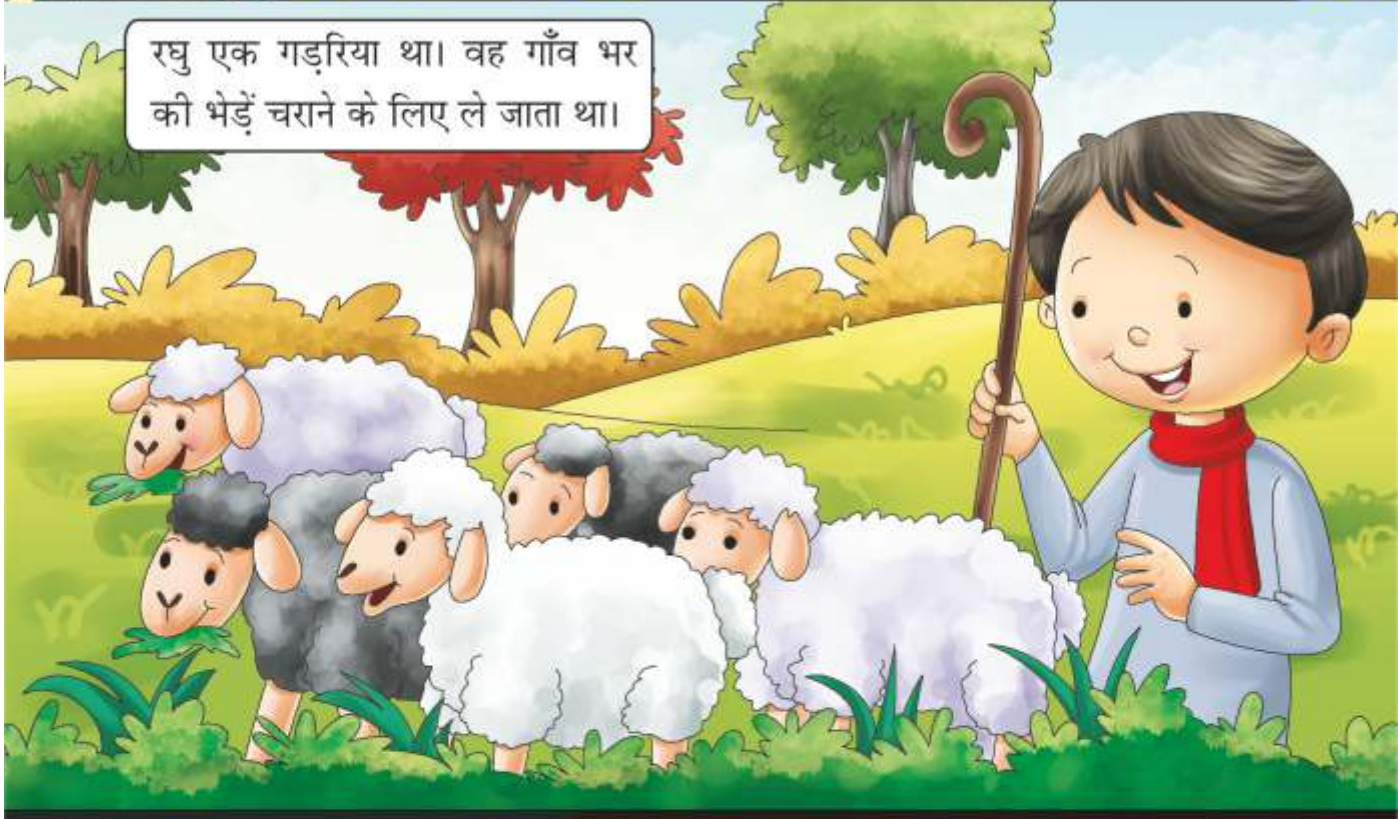
सर्दी रानी आओ जी,
साथ रजाई लाओ जी।
चुनू राजा रूठ रहे,
लोरी आकर गाओ जी।
पांव हमारे ठिठुर रहे,
हीटर जरा जलाओ जी।
भूख लगी है जोरों से,
किशमिश जरा खिलाओ जी।
पढ़ना लिखना याद रहे,
ऐसा गुरु सिखलाओ जी।
शिक्षक का सम्मान करें,
सुन्दर सबक पढ़ाओ जी।



दादाजी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

रघु एक गड़रिया था। वह गाँव भर
की भेड़ें चराने के लिए ले जाता था।



गाँव वाले उसे जो कुछ देते, उसी
से उसका गुजारा होता था।






उसके माता-पिता बहुत गरीब थे इसलिए वे उसे स्कूल नहीं भेज सके।
परन्तु रघु बहुत बुद्धिमान था इसलिए सभी उसे बहुत प्यार करते थे।

एक दिन की बात है। रघु पहाड़ी की तलहटी में भेड़ें चरा रहा था कि अचानक जोर की आँधी चलने लगी।




रघु झटपट अपनी भेड़ों को इकट्ठा करके एक गुफा में ले आया।






उसके ध्यान से देखने पर, उसे उनमें कुछ भेड़ें कम लगीं। उसने फुर्ति से गुफा के द्वार को पत्थर से बन्द किया और शेष भेड़ों को दूढ़ने चल पड़ा।



आँधी बहुत तेज थी और वर्षा भी होने लगी थी, तभी रघु ने देखा कि पहाड़ी से गुजरने वाली रेलवे-लाइन पर एक बहुत बड़ी चट्टान के टुकड़े पड़े हैं।



अरे! यदि रेलगाड़ी इन टुकड़ों से टकरा गई तो बहुत बड़ी दुर्घटना हो जाएगी। हो सकता है कि रेलगाड़ी पलट कर खाई में गिर जाए।



इस तरह तो जान-माल की बहुत हानि हो जाएगी। तभी उसे रेलगाड़ी की सीटी सुनाई दी। रघु ने तुरन्त अपने गले में बँधा लाल स्कार्फ (मफलर) खोल लिया और एक पल की देरी किए बिना रेलगाड़ी की ओर दौड़ पड़ा।



रघु दौड़ता ही जा रहा था। उधर रेलगाड़ी तीव्र गति से आ रही थी, लेकिन वह अपने प्राणों की परवाह किए बिना भागता जा रहा था। वह स्कार्फ को हिलाते हुए बोलता जा रहा था— 'रोको-रोको, आगे खतरा है।'

रेलगाड़ी के ड्राइवर ने जब लाल स्कार्फ देखा तो तुरन्त गाड़ी रोक दी क्योंकि लाल रंग खतरे का संकेत भी देता है।



दुर्घटना से बचाने के लिए रेल अधिकारियों ने रघु की सराहना करते हुए उसे पुरस्कृत करने की घोषणा की। गाँववालों को जब इस घटना का पता चला तो वे भी उसकी प्रशंसा किए बिना न रह सके।

ब्रह्मांड में सोच से ज्यादा रहने लायक ग्रह



वॉशिंगटन (भाषा)। अब तक जितने ग्रहों को रहने लायक समझा गया था ब्रह्मांड में उससे कहीं ज्यादा ऐसे ग्रह हैं जिन पर जीवन संभव है। एक नए अध्ययन में ऐसा दावा किया गया है। अमेरिका के पेनसिल्वानिया स्टेट यूनिवर्सिटी के भूवैज्ञानिकों ने सुझाया है कि जीवन की माकूल स्थितियों के लिए लम्बे समय तक जरूरी मानी गई टेक्टॉनिक प्लेटें असल में आवश्यक नहीं हैं। रहने लायक ग्रहों या अन्य ग्रहों पर जीवन की तलाश के वक्त वैज्ञानिकों ने वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड के तत्वों को परखा। धरती पर वायुमंडलीय कार्बन डाइऑक्साइड ग्रीनहाउस प्रभाव के माध्यम से सतह के ताप को बढ़ाता है। यूनिवर्सिटी में भूविज्ञान के सहायक प्राध्यापक ब्रैंडफोर्ड के अनुसार ज्वालामुखीय घटनाएं वायुमंडल में गैस स्रावित करती हैं और फिर चट्टानों की टूट-फूट के जरिए वायुमंडल से कार्बन डाइऑक्साइड खींची जाती है और जो बाद में अलग-अलग सतही चट्टानों और तलछट तक पहुँचती है। इन दोनों प्रक्रियाओं के संतुलन से वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड एक निश्चित स्तर पर रहता है जो मौसम को संयमित रखने और जीवन के अनुकूल बनाने के लिए जरूरी है। अनुसंधानकर्ताओं ने पाया कि जिन ग्रहों में टेक्टॉनिक प्लेटें नहीं हैं वहाँ भी लम्बे अरसे तक जीवन सम्भव है। यह अध्ययन एस्ट्रोबायोलॉजी पत्रिका में प्रकाशित हुआ है।

वैज्ञानिकों ने तारों के झुंड की तस्वीरें लीं

लंदन (भाषा)। वैज्ञानिकों ने धरती से करीब 5,500 प्रकाशवर्ष की दूरी पर स्थित नीले रंग के चमकदार धूल का लबादा ओढे सैकड़ों युवा तारों की तस्वीर ली है। यह तस्वीर देखने में जितनी सुन्दर है, अपने रंग के कारण उतनी ही अनोखी भी है।

स्टार क्लस्टर ऐसे तारों का झुंड है जिनकी उत्पत्ति समान हो और जो अपनी गुरुत्वाकर्षण शक्ति के कारण एक-दूसरे के आसपास झुंड की भाँति स्थित हों। चिली के यूरोपीय सर्दन ऑब्जर्वेटरी की विशाल दूरबीन पर लगे हॉक-1 इंफ्रारेड इमेजर के जरिए वैज्ञानिकों ने जहाज के आकार वाले तारों के झुंड 'वेला' के भीतर स्थित



तारों के इस छोटे समूह आरसीडब्ल्यू 38 की तस्वीर ली है। आरसीडब्ल्यू 38 का केन्द्र बेहद चमकीला और नीले रंग का है। इसमें कई युवा तारे भी हैं जबकि कई आद्य तारे हैं जो अभी अपना स्वरूप ग्रहण कर रहे हैं। इन युवा तारों से होने वाले विकिरण से आसपास का क्षेत्र चमकता रहता है।

(साभार, रा.स.)

— संग्रहकर्ता : बबलू कुमार

दो बाल कविताएं : महेन्द्र सिंह शेखावत 'उत्साही'

नये वर्ष की बधाई

छोटू बन्दर बोला- भाई,
नये वर्ष की सबको बधाई।
हाथी, लोमड़, भालू, गीदड़,
गले मिलो सब भाई-भाई।
नया वर्ष सबको मंगल हो,
एक-दूजे को दो बधाई।
प्रण करें हम मिलकर सारे,
नहीं किसी से करें लड़ाई।
नये वर्ष की यही कामना,
जीवन में फँसे खुशहाली।
नहीं किसी से वैर-भाव हो,
रैना सबकी हो उजियाली।



नव पुण्य प्रण

नया साल फिर आ गया,
आओ करें यह प्रण।
तन अपना स्वस्थ रहे,
शुद्ध हो अपना मन।
हिंसा-चोरी, पाप-छल,
दूर रहे बुराई।
सत्य कर्म पथ पर चलें,
न हो कभी लड़ाई।
अच्छाई का साथ दें,
अच्छा हमें बनना।
अच्छा जीवन का लक्ष्य,
प्राप्त हमको करना।



सहृदय चिकित्सक

उन्नीसवीं शती को भारतीय नवजागरण का काल कहा जाता है। बंगाल इसका केन्द्र था और उस समय वहाँ एक से एक समाज सुधारक मनीषियों का प्रादुर्भाव हुआ।

इन्ही समाज सुधारकों में से एक थे— रामतनु लाहिड़ी। अपने परोपकारी स्वभाव और जनसेवा के कारण बंगाल में उनका बड़ा ही सम्मान था। डॉ. कालीचरण लाहिड़ी उनके छोटे भाई थे। वे पेशे से चिकित्सक थे।

कालीचरण बाबू दुर्लभ मानव गुणों की खान थे। उनके भीतर सरलता, सहृदयता और भावुकता की त्रिवेणी प्रवाहित होती रहती थी। उनके स्वभाव की यही विशिष्टता उन्हें अन्य चिकित्सकों से अलग रखती थी।

वे गरीबों का मुफ्त में इलाज किया करते थे। कोई भी दीन-हीन व्यक्ति उन्हें चिकित्सा के लिए बुलाता तो वे बिना कोई अतिरिक्त फीस लिए उसके घर पहुँच जाते। यदि किसी के पास दवा के पैसे नहीं होते तो वह भी वे अपनी ओर से मुफ्त में ही देते थे। उन्होंने दीन-दुखियों की सहायता के लिए एक औषधालय भी खोल रखा था।

एक दिन जाड़े की रात में उन्हें एक रोगी को देखने उसके घर जाना पड़ा। उसे देखने के बाद उन्होंने



उसके सम्बन्धियों को दवा का पुर्जा लिखकर दिया। साथ ही यह भी बता दिया कि वे लोग दवा उनके ही औषधालय से ले लें। उन लोगों ने वैसा ही किया।

दवा का पुर्जा देखते ही औषधालय का कर्मचारी हो-होकर हँसने लगा। यह क्या? उस पुर्जे में मुफ्त में दवा के साथ ही एक गाड़ी खर (फूस) भी देने के लिए लिखा हुआ था। पुर्जे के अनुसार दवा देकर एक कर्मचारी कालीचरण बाबू के पास गया और एक गाड़ी खर के बारे में जानना चाहा।

उस कर्मचारी की जिज्ञासा शान्त करने के लिए उन्होंने भावुक होकर कहना शुरू किया— मैं जिस रोगी को देखने गया था, उसके छप्पर पर फूस नहीं था। ठंड के इस मौसम में वह रातभर ठिठुरता रहता है ऐसे में मेरी दवा लिखने का क्या प्रयोजन रह जायेगा? अत्यधिक ठंड में ठिठुरने के कारण मेरी दवा का उस पर कोई असर ही न होगा।

कालीचरण बाबू की इस बात को सुनकर उस कर्मचारी का मस्तक उनके प्रति कृतज्ञता से झुक गया।

हाज़िर जवाब

सर्वपल्ली डॉक्टर राधाकृष्णन के यहाँ एक बार भोज था। उसमें उपस्थित एक अंग्रेज ने कहा— अंग्रेज लोग ईश्वर को बहुत प्यारे हैं। परमात्मा ने हमारा निर्माण बहुत ही स्नेह और यत्न से किया है। तभी तो देखो हम इतने गोरे हैं। हम परमात्मा का बहुत आभार मानते हैं।

डॉक्टर राधाकृष्णन भी कब चूकने वाले थे। वे बोले— मित्रों, बात ये है कि भगवान ने जब रोटी सेकनी शुरू की तब पहली रोटी कुछ कम सिकी अतः वह हुई अंग्रेज। दूसरी रोटी अधिक सिक गई वह हुई नीग्रो (काली) जाति। तीसरी रोटी बिल्कुल ठीक सिकी उससे हुए हम भारतीय।

सभी मंत्रमुग्ध हो डॉक्टर राधाकृष्णन की ओर देखते रहे।

लोककथा : शिवनारायण सिंह

वह मूर्ख रह गया



उपवन में पाठशाला खुल जाने पर हर ओर प्रसन्नता की लहर-सी दौड़ गई। हर कोई कहने लगा कि अब उपवन में कोई अशिक्षित न रह पायेगा। हर कोई पढ़-लिखकर ज्ञानी बन जायेगा। हर पंछी के मन में नवीन आशाओं का संचार होने लगा। उपवन में ज्ञान की ज्योति जलाने गुरु जी आ गये थे। वे हर किसी को बहुत ही प्यार से पढ़ा रहे थे। वे नियम के बड़े पक्के थे। विद्यालय में हर पंछी का वक्त पर पहुँचना अनिवार्य था।

उपवन का हर पंछी सुबह नदी के जल में नहा-धोकर पाठ्य पुस्तकें सम्भालकर नियत समय पर उपवन की पाठशाला में गुरु जी से सबक सीखने

जा पहुँचता। हर पंछी गुरु जी का बड़ा आदर करता था। गुरु जी अनुशासन को बड़ा महत्व देते थे। उनका कहना था कि विद्या के प्रति लगन एवं दृढ़ निश्चय होना चाहिए तभी विद्या प्राप्त हो सकती है। गुरु के प्रति श्रद्धाभाव होना जरूरी है।

तभी तो मैना गुरु जी से सबक सीखकर घर पर दुहराने लगी थी। वह अब मीठा गा सकती थी। नीम की निबौली खाने वाला कौआ तक गुरु जी से कुछ न कुछ सबक सीख चुका था। हरियल तोता तो गुरु जी से कई शब्द सीखकर उपवन में नाम रोशन कर रहा था। बुलबुल भी गुरु जी से बहुत कुछ सीखकर मीठा गाने लगी थी। कोयल गुरु जी की बातें बड़े

मनोयोग से सुनती थी। वह नदी तट पर जाकर गुरु जी द्वारा पढ़ायी गई बातें याद करती-फिरती। वह गान विद्या में पारंगत हो गयी। उसके 'कुहू कुहू' के बोलों ने उपवन में धूम मचा दी थी। मोर ने गुरु जी से नृत्य विद्या सीख ली। उसका मनोहारी नृत्य देखकर हर कोई ठगा-सा रह जाता परन्तु एक पंछी ऐसा था जो हर वक्त गुरु जी का मजाक उड़ाने और पंछियों को चिढ़ाने में ही अपनी निपुणता समझता था। वह था उल्लू। वह गुरु जी से कुछ भी सीख न पाया। वह अनपढ़ रह गया। पंछियों ने उसे बहुत समझाया कि तुम भी गुरु जी से कोई न कोई विद्या सीख लो ताकि जग में तुम्हारा भी नाम हो जाये पर उसे तो हर किसी को चिढ़ाने से ही फुर्सत नहीं मिलती थी।

हर पंछी कोई न कोई विद्या सीखकर अपनी-अपनी विद्या में पारंगत हो गया था। पर उल्लू कुछ भी सीख न पाने के कारण मूर्ख पक्षी कहलाने लगा। एक मूर्ख पंछी से कोई भी बात करने को तैयार न था। उल्लू गुरु जी से कुछ भी न सीखकर अपना नुकसान स्वयं कर चुका था। उसे समझते देर न लगी

कि एक अनपढ़ का पढ़े-लिखो के साथ मेल बैठना मुश्किल है। कोई भी पंछी उसके साथ उठना-बैठना पसन्द नहीं कर रहा था। उसे लगने लगा जैसे वह सारे पंछी-समाज से कटकर अलग रह गया है। वह उपवन में अपना मान-सम्मान स्वयं खो चुका था। गुरु जी का अनादर करने का नतीजा यह हुआ कि वह मूर्ख रह गया। उसे किसी के सामने अपनी सूरत दिखाने में भी शर्म महसूस हो रही थी। उसने सोचा— अब यह उपवन मेरे जैसे मूर्ख के रहने लायक नहीं रह गया।

अब वह उपवन से दूर एक पुराने खंडहर में जाकर रहने लगा। दिन में किसी के सामने जाने में वह शर्म महसूस करता था। वह अब से सिर्फ रात के अंधेरे में ही बाहर निकलने लगा। उल्लू आज भी मूर्ख कहा जाता है और ज्ञान के प्रकाश से दूर रह जाने के कारण वह सिर्फ रात में ही भ्रमण के लिए निकलता है। आज तो उल्लू और मूर्ख ये दो शब्द मानों एक-दूसरे के पर्याय बन गये हैं। किसी को मूर्ख कहने के लिए लोग उल्लू शब्द का प्रयोग करते हैं।

जानकारी : विद्या प्रकाश

वृक्ष कैसे सहते हैं ठंड

उत्तरी गोलार्द्ध की हाड़कंपा देने वाली तेज ठंडक में पेड़-पौधों को पानी की कमी का सामना उसी प्रकार करना पड़ता है जिस प्रकार गर्म इलाकों के पेड़-पौधों को गर्मी के मौसम में। इसकी वजह यह है कि सर्दियों में बर्फ के कारण इन इलाकों की मिट्टी जमकर इतनी कड़ी हो जाया करती है कि पेड़-पौधे उसमें से तनिक भी पानी नहीं खींच पाते। इस स्थिति में उन्हें अपने पत्तों में मौजूद रस से ही अपना पोषण और गुजारा करना पड़ता है।

इसका सबसे अच्छा उदाहरण है चीड़ के सुईनुमा पत्ते। अगर इन पत्तों में मौजूद पानी जमकर बर्फ बन जाये तो पत्ते टूटकर झड़ जायेंगे। मगर पत्तों में रस अत्यल्प मात्रा में होता है यानी उनमें जमने के लिए अधिक पानी होता ही नहीं। यह पानी भांप बनकर नहीं उड़ता क्योंकि पत्तियों के छेद बहुत गहरे खांचों में स्थित होते हैं।

मछली नहीं है ह्वेल

आमतौर लोग ह्वेल को मछली मानते हैं जबकि जीवविज्ञानी इसे मछलियों की श्रेणी में नहीं रखते हुए स्तनधारी प्राणियों की श्रेणी में रखते हैं। ऐसा क्यों? आइये, देखते हैं।

इसमें कोई संदेह नहीं कि ह्वेल एक समुद्री जीव है; जो पानी में रहती है और उसकी शक्ल भी मछली से मिलती है, किन्तु कई मामलों में यह मछलियों से भिन्न है। ह्वेल के गिल्स नहीं होते हैं जबकि मछलियों के होते हैं जिससे वे श्वास लेती है। ह्वेल के गिल्स की बजाय हमारी तरह फेफड़े होते हैं और वह फेफड़ों से श्वास लेती है। ह्वेल श्वास लेने के लिए थोड़ी-थोड़ी देर में पानी से ऊपर अपना सिर लाती है। वैसे यह 45 मिनट बिना श्वास लिए पानी के भीतर रह सकती है।

अन्य मछलियां अंडे देती हैं परन्तु ह्वेल सीधे बच्चे पैदा करती है। यही नहीं उन्हें अपना दूध भी पिलाती है। ह्वेल के अलावा अन्य किसी मछली के स्तन नहीं होते। इसके अलावा इसके शरीर के अंग स्तनधारियों से मिलते हैं। कुछ ह्वेल के दांत होते हैं और कुछ में दांतों के स्थान पर हड्डियों की प्लेट होती है।

ह्वेल का विकास डायनासोर से हुआ माना जाता है। इसका आकार सभी जीव-जन्तुओं में सबसे विशाल है। नीली ह्वेल तो 30 मीटर लम्बी और 125 टन तक भारी हो सकती है। इसकी जीभ ही ढाई टन की होती है। मांसपेशियों का वजन 50 टन और हड्डियों का वजन 20 टन होता है। इसकी पूंछ 6 मीटर चौड़ी होती है।

सन् 1909 में दक्षिण जार्जिया के तट पर मिली एक मादा नीली ह्वेल की लम्बाई 33.58 मीटर थी। 20 मार्च 1947 को दक्षिणी समुद्र में 27.6 मीटर लम्बी और 187 टन की ह्वेल पकड़ी गई थी।

ह्वेल गहरा गोता लगाने में भी माहिर है।



एक साहसी वन्यजीव : भालू



जमीन पर विचरण करने वाले मांसाहारी जीवों में भालू सबसे बड़ा जीव है। विश्व में इसकी सात प्रजातियां पायी जाती हैं। ये हैं— उत्तरी अमेरिका का काला भालू, दक्षिणी अमरीका का स्पेल्टे-फिल्ड भालू, एशिया का काला भालू, ध्रुव प्रदेश का ध्रुवीय भालू, सन भालू, स्लोथ भालू तथा भूरा भालू। भूरे भालू की अनेक उपजातियां हैं। भूरे भालू की उपजातियों में अलास्का का कोडियाक भालू तथा राकी पर्वत के जंगलों में पाया जाने वाला ग्रिजली भालू सर्वाधिक प्रसिद्ध है। कोडियाक भालू जमीन पर विचरण करने वाला विश्व का सबसे बड़ा मांसाहारी जीव है।

कोडियाक भालू की लम्बाई 2.75 मीटर तक तथा वजन आठ सौ किलोग्राम तक होता है। कोडियाक भालू इतना शक्तिशाली होता है कि इसके एक ही आक्रमण में जंगली भैंसा दम तोड़ देता है।

भारत में पाये जाने वाले भालू को स्लोथ भालू कहते हैं। यह एशिया तथा विश्व के अन्य भालुओं से काफी भिन्न होता है। भारतीय भालू हिमालय पर पाये जाने वाले काले भालू से आकार में कुछ छोटा होता है। इसकी लम्बाई 1.25 मीटर से 1.75 मीटर तक, ऊँचाई लगभग 80 सेंटीमीटर तथा वजन 125 से 145 किलोग्राम तक होता है। भारतीय भालू के बाल काले, लम्बे और कड़े होते हैं एवं इसकी छाती पर सफेद रंग का एक निशान होता है। इसका थूथन लम्बा और पतला होता है तथा इस पर हल्के-हल्के बाल होते हैं। भारतीय भालू के अगले पैर तथा पंजे काफी लम्बे और शक्तिशाली होते हैं। इसके कान और आँखें छोटी होती हैं। इसकी घ्राणशक्ति बहुत तेज होती है।

भारतीय भालू को मांसाहारी जीवों की श्रेणी में रखा गया है, किन्तु यह अन्य हिंसक पशुओं के समान मांसाहारी नहीं है। भालू को यदि छेड़ा न जाय तो यह कभी भी आहार के लिए मानव पर आक्रमण नहीं करता। यह क्रोधित होने पर या छेड़ने पर ही उग्र रूप धारण करता है। भालू बड़ा साहसी होता है और अवसर पड़ने पर शेर तक का सामना कर सकता है।

भालू एक बुद्धिमान जीव है। इसे चिड़ियाघर तथा सर्कस में सरलता से रखा जा सकता है एवं पालतू बनाया जा सकता है। भारत की कलन्दर जनजाति के लोग इसे विशेष रूप से पालते हैं तथा इसे विभिन्न प्रकार के करतब सिखाकर उनका प्रदर्शन करते हैं एवं अपनी आजीविका चलाते हैं।

यह एक दुख की बात है कि बीसवीं सदी में भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व में भालुओं की संख्या में कमी आयी है। इसका मुख्य कारण शिकार है।

भालुओं की घटती हुई संख्या को देखते हुए विश्व के अनेक देशों की सरकारों ने इनके शिकार पर प्रतिबन्ध लगा दिया है तथा इनकी संख्या बढ़ाने के प्रयास आरम्भ किये हैं। इसके परिणामस्वरूप आशा की जाती है कि यह अद्भुत प्राणी समाप्त होने से बच जायेगा।

कछुआ जीत गया



बालों में राधिका बहुत चतुर थी मगर पढ़ाई में उसका मन नहीं लगता था। किताबें देखते ही उसे सुस्ती आ घेरती थी। उसकी मम्मी उसे किताब देकर जाती और कुछ देर बार लौटकर देखती तो राधिका या तो कापी-किताब पर चित्रकारी कर रही होती या बैठे-बैठे जम्हाई ले रही होती। मम्मी खूब डांटती थी उसे। उसकी 'रिपोर्ट कार्ड' में हर विषय के नीचे लाल स्याही से रेखाएं खिंची हुई होती और टिप्पणी वाले खाने में लिखा होता- 'सुस्त', 'हर विषय में कमजोर', 'उत्तीर्ण होना है तो मेहनत करो' आदि।

राधिका का छोटा भाई पढ़ाई में बहुत अच्छा था। वह हमेशा अपना होमवर्क लगन के साथ समय पर करता था। उसकी लिखाई भी बहुत अच्छी थी। मम्मी-पापा के मुँह से राधिका उसकी तारीफ सुनती तो मन मसोस कर रह जाती। राधिका को सोना अच्छा लगता था तथा सहेलियों के साथ गप्पे हांकने में बहुत मजा आता था। पढ़ाई के नाम पर तो उसकी आँखें बन्द होने लगती थी।

दीपावली और दशहरा के कारण स्कूलों में छुट्टियाँ हो गई थी। बच्चों के खूब मजे थे। वे हर समय खेलते रहते। बंटी भी खेल में मस्त रहता था। मम्मी-पापा ने उसे क्रिकेट का नया बैट लाकर दिया था। वह आसपास के लड़कों के साथ दिनभर खेलता रहता।

राधिका की नानी भी उन दिनों उनके घर पर थीं। राधिका के और भी मजे हो गये। वह नानी के पास ही सोती और उससे कहानी सुनने की जिद करती। एक दिन नानी ने उसे कछुए और खरगोश की कहानी सुनाई कि किस तरह घमण्डी खरगोश कुछ





देर तक तेज भागने के बाद एक पेड़ की छाया में चैन से सो जाता है और कछुआ अपनी धीमी गति के बावजूद लगातार चलते हुए उससे आगे निकलकर दौड़ जीत जाता है।

नानी ने कहा— वैसे तो यह कहानी बहुत पुरानी है मगर इसमें तुम्हारे लिए कुछ सीख भी है। आजकल स्कूल बन्द हैं। खरगोश की तरह सभी बच्चे हर समय खेलकूद में मस्त रहते हैं। तुम्हारे पास समय है। तुम अपनी कमजोरी दूर कर सकती हो। तुम्हारे सारे 'ग्रेड' सुधर जाएंगे।

राधिका को नानी की बात कुछ-कुछ समझ में आने लगी थी। अगली सुबह उसने बड़े चाव से किताब खोली। शुरू-शुरू में कुछ देर के लिए उसका सिर चकराया और बोरियत भी हुई। इतनी देर बैठने की आदत जो नहीं थी उसे।

धीरे-धीरे नानी मां की मदद से उसे पढ़ना अच्छा लगने लगा। कछुए और खरगोश की कहानी वह भूलती नहीं थी। इतिहास और विज्ञान के पाठ जो उसे नीरस और उबाऊ लगते थे, अब अच्छे लगने लगे। अब मम्मी उसे कभी नहीं डांटती थी।

महीने बाद स्कूल खुले। परीक्षा होने में एक महीना बाकी था। राधिका ने पहले से ही अच्छी तैयारी कर रखी थी। बच्चों के तो मानो पसीने ही छूट गये। इतना सारा कोर्स और होमवर्क। स्कूल जब बन्द थे तो उन्होंने जमकर ऐश भी तो की थी। जिस दिन रिजल्ट आना था बंटी बहुत परेशान नजर आ रहा था। मम्मी-पापा जब मार्क-शीट लेकर आए तो उन्होंने सबसे पहले राधिका को शाबाशी दी। वह कक्षा में दूसरे स्थान पर आई थी। बंटी तो बहुत मुश्किल से बस पास हो सका था। नानी बहुत खुश थी। सच में कछुआ जीत गया था।

दो बाल कविताएं : हरजीत निषाद

नव जीवन नव वर्ष ले आया

वैभव प्रेम हर्ष ले आया।
शुभ उत्कर्ष मनो को भाया।
स्वागत है दिल से हर दिल का,
नव जीवन नव वर्ष ले आया।

शुद्ध नियम नैतिकता वाला।
मिलवर्तन मानवता वाला।
अच्छाई हम सब अपनाएं,
जीवन हो पावनता वाला।
कोई भूखा प्यासा न हो।

मन में कहीं निराशा न हो।
मिलवर्तन के साथ प्रगति हो,
बंधे उम्मीद हताशा न हो।

किरण प्रथम प्रभात की आई।
खुशियों की सौगातें लाई।
नया जोश जन जन के मन में,
देते हैं नव वर्ष बधाई।



नया साल आया

नया साल आया,
नई खुशी लाया।
दो बधाई सभी को,
कोई नहीं पराया।।

सर्वहित शुभकामना,
शुभ मंगल याचना।
सबके प्रति मन में,
पर उपकारी भावना।।

सबके हित का भाव,
ना कोई दुर्भाव।
प्यार से रहें सब,
बने ऐसा स्वभाव।।

नई किरण नया साल,
हृदय रखें विशाल।
सबका करें भला,
सबका रखें ख्याल।।



शुक्रिया अदा करो

एक लड़का था कुंदन। एक बार वह सोने का अभिनय कर लेटा हुआ था। किसी ने उसे झकझोर कर जगा दिया और पूछने लगा— किसी बात से नाराज हो बच्चे?

—अब एक हो तो बताऊं मेरे जीवन में तो परेशानियों का अम्बार है।— कुंदन ने आँखें खोलते हुए बताया।



—इतने छोटे से बच्चे के पीछे ढेर सारी परेशानियां। यह तो अच्छी बात नहीं... चलो अपनी परेशानियां बताओ।— उसने सहानुभूति व्यक्त की।

—मेरे मम्मी-पापा हमेशा डांटते रहते हैं।— कुंदन ने बताया।

—बेटे शुक्रिया अदा करो कि वे तुम्हारे सच्चे शुभचिन्तक हैं और उन्हें तुम्हारी कबिलियत पर भरोसा है तभी तो तुम्हारी असफलताओ-गलतियों पर डांटते हैं।— उसने समझाया।

—उपदेशक जी आप हैं कौन?— खिसियाते हुए कुंदन ने पूछा।

—अन्त में बताऊंगा, अब तुम अपनी दूसरी परेशानी बताओ।— वह बोला।

—स्कूल में शिक्षक हमेशा डांटते-फटकाते रहते हैं क्योंकि मैं टेस्ट में कम नम्बर लाता हूँ। इसलिए अच्छा रैंक भी नहीं आ सकता।— कुंदन ने मुँह बिगाड़ते हुए बताया।

—शुक्र करो कि वे तुम्हारे हितैषी हैं और तुमसे अधिक अच्छे परिणाम की अपेक्षा रखते हैं। उसने समझाया।

—मेरे क्रीड़ा शिक्षक हमेशा मुझे अतिरिक्त खिलाड़ी बनाकर बाहर बैठा देते हैं, टीम में शामिल नहीं करते।— कुंदन ने कहा।

—तुम्हें शुक्रगुजार होना चाहिए कि वे तुममें अच्छे खिलाड़ी की सम्भावना देखते हैं और एक दिन टीम में अवश्य शामिल करेंगे।— उसने आश्वस्त किया।

—मुझे घर के ढेर सारे छोटे-बड़े काम करने पड़ते हैं।— कुंदन ने मुँह बनाते हुए कहा।

—शुक्र करो कि घरवाले तुम्हें इस लायक समझते हैं, तुम्हें बुद्धिमान समझते हैं और इस प्रकार अपने फर्ज से उद्धार होने का अवसर प्रदान करते हैं।— उसने कहा।

—जब भी मैं टीवी देखने बैठता हूँ मम्मी डांटने लगती है।— कुंदन ने कहा।

—शुक्रिया अदा करो कि तुम्हारी सेहत और आँखों की सुरक्षा की चिन्ता तुम्हारी मम्मी को बहुत ज्यादा है।— वह बोला।

—मुझे प्रायः ऊलजलूल सपने आते हैं जिसके कारण मेरी नींद खुल जाती है।— कुंदन ने बताया।

—शुक्र करो कि सपने आते हैं, ईश्वर उन्हीं को सपने दिखाता है जिनमें उसे पूरा करने की क्षमता देखता है। तुम्हारे एक राष्ट्रपति ने भी इसकी

अनुशांसा की थी। याद रखना... अच्छा सोचोगे, अच्छी कल्पना करोगे तभी अच्छे सपने आँखों में आएंगे।— उसने हिदायत दी।

—मुझे जलक्रीड़ा बहुत पसन्द है और बहुत देर तक नहाना चाहता हूँ।— कुंदन ने बताया।

—शुक्र करो कि बारिश अभी होती है लेकिन बेटे समय की नजाकत अनुसार पानी का इस्तेमाल मितव्ययितापूर्वक करना चाहिए क्योंकि इन दिनों पानी की निरन्तर कमी हो रही है और इसकी जरूरत सभी को होती है।— उसने समझाया।

—दूसरों को गलत काम करते देख, बेईमानी करते देख मुझे बहुत कोफ्त होती है और मैं छटपटाने लगता हूँ।— कुंदन बोला।

—शुक्र करो कि तुममें बेहतर इन्सान बनने की सम्भावना है जो बुरा नहीं देख सकता।— वह बोला।

—मैं जो कहता हूँ उस पर अमल नहीं कर पाता फिर अपने ऊपर चिढ़ने लगता हूँ।— कुंदन ने खिसयाते बताया।

—शुक्र करो कि तुममें अच्छा करने की छटपटाहट है, संकल्प शक्ति है, बस थोड़ा उस पर ध्यान केन्द्रित करो। समय आने पर धीरे-धीरे ये सभी परेशानियाँ खत्म और बस किला फतह।— उसने हँसते हुए समझाया और फिर बोला— अपनी और परेशानी बताओ?



कुंदन ने कहा— बस इतनी ही हैं। अब तो बता दो आप कौन हैं?

—जानना चाहते हो? मैं कौन हूँ? मैं हूँ समय; जो दिन-रात में बदलते हुए सप्ताह, महीने और फिर साल में बदल जाता हूँ और मैं वो हूँ जो हर साल पहली जनवरी को आता हूँ। अब तो पहचान गये न!

कुंदन के चेहरे पर मुस्कराहट खिल गई।
—अच्छा समझ गया, तो आप श्रीमानजी नया साल हैं, मैंने क्रोध के कारण कल रात आपके आगमन पर स्वागत नहीं किया।

—कोई बात नहीं अभी कर लो, चलो मैं शुरुआत करता हूँ... नये वर्ष यानी मेरी तरफ से तुम्हें ढेरों शुभकामनाएं।— नववर्ष ने हँसते हुए कहा।

—शुक्रिया दोस्त! कहते हुए कुंदन ने एक झटक में बिस्तर को छोड़ दिया।

उनकी व्यंग्य लेखनी ने कई अंग्रेजों को घायल किया था

बात उन दिनों की है जब निर्भीक पत्रकार लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक बर्मा में थे। वहाँ हिन्दुस्तानियों के साथ अंग्रेज सरकार बात-बात पर रूखा व्यवहार करती। कई बार हिन्दुस्तानियों को बिना वजह ही जेल में ठूस दिया करती।



लोकमान्य तिलक को यह बात उचित नहीं लगी कि निर्दोष हिन्दुस्तानियों को बेवजह जेल में ठूस दिया जाए। उन्होंने अंग्रेज सरकार के खिलाफ एक ज्ञापन दिया और कहा— यदि हिन्दुस्तानियों को सात दिन के अन्दर रिहा न किया गया तो हम जंग की शुरुआत करेंगे, जिसका अंजाम बहुत बुरा होगा।

पूरे सात दिनों के उपरान्त भी जब अंग्रेज सरकार ने निर्दोषों को आजाद न किया तो लोकमान्य तिलक ने एक बुलेटिन छपा, जिसमें अंग्रेजों के कारनामों की सच्चाई थी।

बुलेटिन पढ़कर अंग्रेज सरकार ने अपने अधिकारियों को आदेश दिया— तिलक को तुरन्त गिरफ्तार कर जेल में बन्द कर दिया। जेल में उन्हें समाचार पढ़ने की अनुमति नहीं थी। इतना होने पर भी जेल में उनका जीवन नियमित था। वे प्रातः से कागज कलम लेकर बैठ जाया करते। अपने विचारों को कागजों पर लिखा करते। 24 घंटे के सफर में वे 15 घंटे तक लिखा करते।

जेल के सफर में ही उन्होंने पांच हजार से भी अधिक पृष्ठ लिखे थे।

इधर हिन्दुस्तान में हिन्दुस्तानियों ने जब अंग्रेज सरकार द्वारा तिलक व निर्दोष भारतीयों को रिहा न करने पर आन्दोलन किया तो अंग्रेज सरकार की आँख खुली। फिर तुरन्त तिलक व भारतीयों को रिहा करने का आदेश बर्मा भिजवाया।

जब तिलक को बर्मा जेल से रिहा किया जाने लगा तो जेल के अधिकारी ने उनसे 'गीता रहस्य' की पांडुलिपि मांग ली और कहा— यह आपने जेल में लिखी है, इसलिए यह बर्मा सरकार की सरकारी सम्पत्ति है।

यह सुनकर तिलक ने बड़े आत्मविश्वास के साथ जवाब दिया— इसे मैं वापस लिख लूंगा क्योंकि स्वाध्याय और स्मरण-शक्ति मेरी सम्पत्ति है। इसे तो भला आप नहीं ले सकते।

यह कहकर तिलक मुस्कुराते हुए अपने साथियों के साथ जेल से बाहर निकल आये। फिर हिन्दुस्तान लौटकर तिलक ने जेल में लिखे पृष्ठों को अपनी स्मरण-शक्ति से पुनः लिखा और अपने प्रिय अखबार 'केसरी' में भी उन्होंने क्रमशः प्रकाशित किया।

आजादी की जंग में तिलक ने अपनी पत्रकारिता से अंग्रेजों को कई मर्तबा घायल किया था क्योंकि उनकी लेखनी में सच्चाई और व्यंग्य का अद्भुत संगम था।

आज तिलक हमारे बीच नहीं, लेकिन उनकी अमिट यादें इतिहास दोहराता रहता है।

विज्ञान प्रश्नोत्तरी



प्रश्न : चन्द्रमा पर किसी वस्तु का भार कम क्यों होता है?

उत्तर : पृथ्वी प्रत्येक वस्तु को अपनी ओर खींचती है। इस कार्य के लिए पृथ्वी को कुछ बल लगाना पड़ता है।

यह बल वस्तु का भार कहलाता है। जब कोई भी वस्तु चन्द्रमा पर होती है तो उसका भार चन्द्रमा के आकर्षण-बल पर निर्भर करता है। चन्द्रमा का आकर्षण-बल पृथ्वी के आकर्षण-बल का छठा भाग होता है। यही कारण है कि चन्द्रमा पर किसी वस्तु का भार कम अर्थात् पृथ्वी पर वस्तु के भार का 1/6 भाग हो जाता है।

प्रश्न : चलती बस से उतरते समय तुम आगे की ओर क्यों गिर पड़ते हो?

उत्तर : बच्चों, जब तुम बस में बैठकर यात्रा कर रहे होते हो तो तुम्हारा शरीर भी बस की गति के साथ-साथ गति अवस्था में रहता है। बस के रूकने से उतरते समय जब तुम अपने पांव नीचे जमीन पर रखते हो तो तुम्हारा निचला भाग विराम अवस्था में आ जाता है अर्थात् स्थिर हो जाता है। दूसरी ओर तुम्हारे शरीर का ऊपरी भाग गति अवस्था में ही बना रहता है। बस, इसी वजह से तुम आगे की ओर गिर पड़ते हो।

प्रश्न : वृक्ष की शाखाओं को हिलाने पर फल जमीन पर ही गिरते हैं, ऊपर क्यों नहीं जाते?

उत्तर : पृथ्वी प्रत्येक वस्तु को अपनी ओर खींचती है। पृथ्वी के इस आकर्षण-बल का नाम गुरुत्वाकर्षण भी है। चन्द्रमा की तुलना में पृथ्वी का आकर्षण बल 6 गुणा अधिक होता है। जब तुम वृक्ष की शाखाओं को हिलाते हो तो फल शाखाओं से टूटकर अलग हो जाते हैं। इन फलों को पृथ्वी गुरुत्वाकर्षण के कारण अपनी ओर खींच लेती है। ये फल ऊपर की ओर इसलिए नहीं जाते क्योंकि चन्द्रमा का आकर्षण-बल पृथ्वी के आकर्षण-बल से कम है तथा वह इसे प्रभावित नहीं कर पाता।

प्रश्न : खाली ट्रक की तुलना में सामान से भरे हुए ट्रक को रोकना कठिन क्यों होता है?

उत्तर : संसार की प्रत्येक वस्तु अवस्था-परिवर्तन (विराम से गति तथा गति से विराम में आना) का विरोध करती है, इस अवस्था-परिवर्तन के विरोध करने के गुण को जड़त्व कहते हैं। खाली ट्रक की तुलना में सामान से भरे हुए ट्रक का जड़त्व अधिक होता है। किसी भी गति करती हुई वस्तु का जड़त्व जितना अधिक होगा, उसे रोकने के लिए तुम्हें उतना ही अधिक बल लगाना पड़ेगा। यही कारण है कि खाली ट्रक की तुलना में सामान से भरे हुए ट्रक को रोकना कठिन होता है।

मैना एक खूबसूरत चिड़िया

मैना एक खूबसूरत और मस्तमौला चिड़िया है जो हमारे घर-आंगन, बाग-बगीचों से लेकर पहाड़ों और जंगलों में दिखाई दे सकती है। पहाड़ी मैना छत्तीसगढ़ का राज्य पक्षी भी है।

प्रजातियों के आधार पर इनके रंग-रूप और आकार में थोड़ी भिन्नता देखी गई है। पहाड़ी मैना के पैर और सिर पीले रंग के होते हैं जबकि परों का रंग काला, चोंच नारंगी और आँखें काली होती हैं। 'किलहटा मैना' का सिर, गर्दन, सीना और दुम काला तथा डैने और पैर पीले रंग के होते हैं। 'दरिया मैना' की चोंच नारंगी होती है।

मैना की एक प्रजाति 'गुलाबी मैना' की है जिसका अधिकांश शरीर गुलाबी आभा लिए होता है। यह दिखने में अन्य प्रजातियों की मैना से अधिक सुन्दर लगती है। 'तेलिया मैना' चमकीले काले रंग की होती है। एक अन्य प्रजाति बादाम रंग वाली 'पवई मैना' की भी है इसकी चोंच तीन रंगों की होती है।

इंसानी बस्तियों में रहने वाली मैना बड़ी सतर्क होती है। बाज, सांप,

नेवला आदि खतरनाक जानवर के दिखते ही यह चिल्लाना शुरू कर देती है।

'पहाड़ी मैना' गजब का गाती है। तोते की भांति वह इंसान की भाषा की नकल भी कर सकती है और गा भी सकती है। ऐसा लगता है जैसे तरह-तरह के वाद्ययंत्र बज रहे हों। वैसे यह इंसानों के अलावा अन्य पक्षियों की आवाज की नकल करने में भी माहिर है।

पहाड़ी मैना इंसानों से दूर पहाड़ी इलाकों में बसती है। जहाँ इसका मुख्य भोजन फल है।

मैना किसानों की मित्र है क्योंकि यह खेती के लिए हानिकारक कीड़े-मकोड़ों का भक्षण कर फसल की रक्षा करती है।

संध्या के समय इन्हें पेड़ों और बिजली या टेलीफोन के तारों पर बैठे देखा जा सकता है। ये एक लाइन में बैठती हैं।

मैना वृक्षों, कुओं या मकानों के सुराख में अपने घोंसले बनाती है। जून से अगस्त के दौरान ये अंडे देती हैं जो संख्या में 4 या 5 होते हैं।



भला बुरा

स्वर्ण रेखा नदी के किनारे किसी महर्षि का आश्रम था। अनेक शिष्य वहाँ रहकर महर्षि से ज्ञान प्राप्त करते।

एक दिन जब सुबह की वेला में महर्षि शिष्यों को ज्ञान की कुछ बातें बता रहे थे कि एक शिष्य बीच में उठ खड़ा हुआ। फिर वह बोला— 'एक सवाल पूछू गुरुवर?'

'क्यों नहीं!' जवाब मिला।

'कोई व्यक्ति अपने को कैसे समझे कि वह भला है या बुरा?'

'इसकी पहचान तो बहुत सरल है।'— गुरु जी बोले।

'वह कैसे?' शिष्य उत्सुक हुआ।

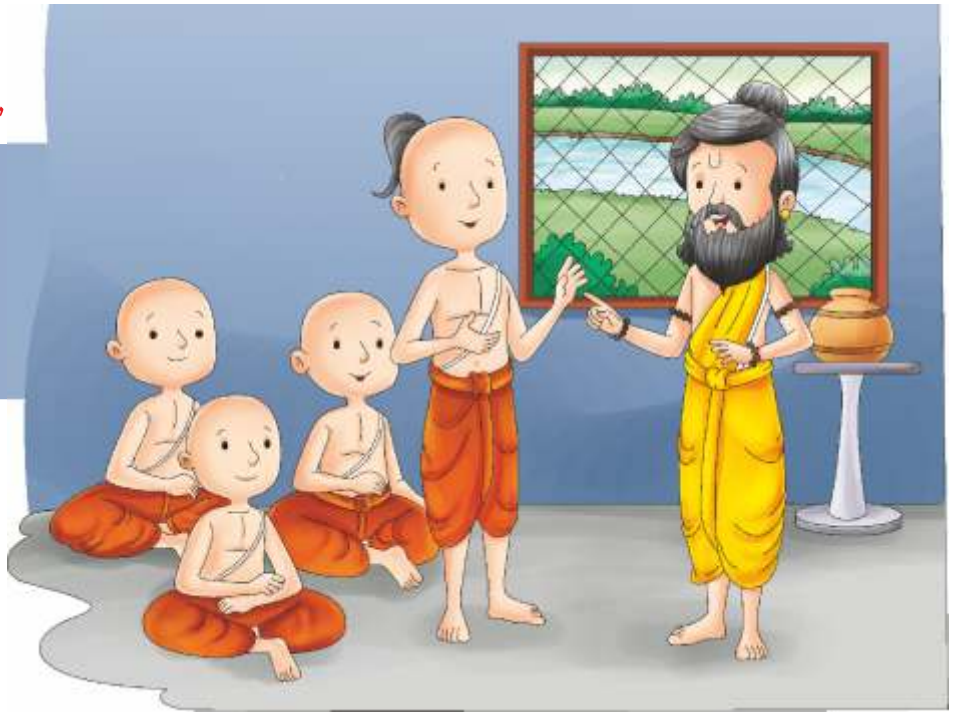
'दूसरे के बारे में हमारे जो भाव, विचार और धारणाएं होती हैं अर्थात् जो आचरण और व्यवहार हम दूसरे के लिए करते हैं, वस्तुतः उन्हीं से हमारे भले-बुरे होने की पहचान हो जाती है।' गुरु जी ने बताया।

शिष्य को महर्षि की बात अच्छी तरह समझ में नहीं आयी। वह फिर बोल उठा, 'थोड़ा और स्पष्ट करें गुरुदेव।'

'अच्छी बात है।' महर्षि ने समझाते हुए आगे कहा— जो व्यक्ति जितने लोगों के बारे में अच्छा भाव अर्थात् विचार रखता है, उनके प्रति जितना अच्छा आचरण करता है, सद्व्यवहार रखता है, वह उतना ही भला होता है और दूसरों के प्रति जो बुरा ख्याल रखता है और उनके प्रति अभद्र व्यवहार या आचरण करता है, वह उतना ही बुरा है। याद रहे, स्वयं के भला कहने या सिद्ध करने से कोई भला नहीं हो जाता और न दूसरे को बुरा कह देने से कोई बुरा नहीं हो जाता। दूसरे के लिए हमारा जो चरित्र होता है, वह हमारे ही चरित्र पर प्रकाश डालता है। दूसरे पर नहीं।

शिष्य को अब अपने भले-बुरे की पहचान हो गयी। अपनी जगह वह बैठ गया।

महर्षि ने ज्ञान की बातें आगे बढ़ाईं।



औषधि भी है स्वाद और सुगंध से भरा हरा धनिया

हमारे यहाँ हरे धनिये का इस्तेमाल प्रायः भोजन व सब्जियों का स्वाद तथा खुशबू बढ़ाने के लिए किया जाता है। हरे धनिये की चटनी भी एक लोकप्रिय सहायक खाद्य पदार्थ है। यह सही है कि हरे धनिये के प्रयोग से भोजन की खूबसूरती और स्वाद बढ़ता है, लेकिन ऐसा नहीं है कि इसे मात्र स्वाद या सजावट की वस्तु माना जाए।

वस्तुतः हरा धनिया बहुत सारे पोषक तत्वों से युक्त वस्तु है। विटामिन 'ए' का तो यह एक तरह से खजाना ही है, जिसके कारण नेत्र-रोगों तथा दृष्टि दोष सम्बन्धी रोगों में यह बहुत उपयोगी है। आधुनिक वैज्ञानिक खोजें तो यहाँ तक कहती हैं कि कच्चे हरे धनिये के इस्तेमाल से शरीर में कैंसर जैसे रोग के विरुद्ध प्रतिरोधक शक्ति बढ़ती है।

हरा धनिया लाभदायक एवं पोषक तत्वों से भरपूर है। विटामिन 'ए' के अतिरिक्त इसमें विटामिन 'बी-कॉम्प्लेक्स' और विटामिन 'सी' भी प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। रासायनिक संरचना की दृष्टि से प्रति सौ ग्राम हरा धनिया में निम्न तत्व उपलब्ध रहते हैं— प्रोटीन— 14.1 ग्राम, वसा— 26.1 ग्राम, कैल्शियम— 4.4 ग्राम, कार्बोहाइड्रेट— 21.6 ग्राम, फास्फोरस— 0.37 ग्राम, नमी— 11.2 ग्राम, लौह तत्व— 0.17 ग्राम। इसके अतिरिक्त प्रति सौ ग्राम धनिये से 44 कैलोरी ऊर्जा प्राप्त होती है।

हरे धनिये को हमेशा कच्चा ही इस्तेमाल किया जाना चाहिए। धनिये की पत्तियों को सब्जियों के साथ पका देने से उनके कई पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं। अतः हरा धनिया कच्चा ही ऊपर से सब्जियों में

डाला जाए या उसकी चटनी बनाकर इस्तेमाल किया जाए।

हरा धनिया लगभग पूरे वर्ष बाजार में उपलब्ध रहता है। धनिया मूलतः भूमध्य सागरीय प्रदेशों का आदिवासी पौधा है। एशिया माइनर, मध्य यूरोप, रूस, भारत आदि देशों में इसकी खेती की जाती है। धनिये के पौधे की ऊँचाई एक से ढाई फुट तक होती है। सर्दियों के दौरान यह पौधा हरी पत्तियों से भरपूर रहता है। बसंत ऋतु के आगमन के साथ ही इसमें सफेद और नीले रंग के फूल आने लगते हैं। इसके बाद धनिये में फल आते हैं, ये गोलाकार हरे और पीले रंग के धारीयुक्त होते हैं। सूखने पर धनिये के इन फलों का इस्तेमाल मसाले के रूप में किया जाता है।

वैसे तो हरा धनिया प्रायः सदैव बाजार में उपलब्ध रहता है, लेकिन यदि आप चाहें तो अपने निजी उपयोग के लिए घर या आंगन में ही गमलों या छोटी क्यारियों में हरा धनिया उगा सकते हैं। इससे आप जब भी चाहे ताजा हरा धनिया प्राप्त कर सकते हैं।

आप यह न समझें कि हरे धनिये का इस्तेमाल केवल भोजन की महक बढ़ाने या स्वादिष्ट चटनी बनाने तक ही सीमित है। इसकी छोटी-छोटी महकती हरी पत्तियों में कई औषधीय गुण छुपे हुए हैं बल्कि कहना चाहिए कि हरा धनिया अपने आप में कोई छोटा-मोटा घरेलू चिकित्सक है तो आइए जरा हम हरे धनिये के चमत्कारी उपचारों के बारे में जानें।



★ अनिद्रा की शिकायत होने पर हरा धनिया पीसकर उसमें शक्कर और पानी मिलाकर नियमित रूप से सेवन करें। इससे चक्कर आना, आँखों के आगे अंधेरा आना और सिरदर्द में भी राहत मिलती है।

★ नकसीर (नाक से खून बहना) में हरा धनिया रामबाण औषधि का काम करता है। धनिये की पत्तियां पीसकर सिर पर मलने और धनिये का रस सूंघाने से नकसीर रूक जाती है। रात-भर धनिये को पानी में भिगोकर सुबह मिश्री के साथ सेवन करने से भी नकसीर में लाभ होता है।

★ भोजन में अरूचि होने पर प्रतिदिन हरे धनिये का करीब 25 ग्राम रस पीएं, इससे भूख खुलती है। पेशाब में जलन होने पर हरे धनिये का शरबत बनाकर सेवन करें।

★ मुँह में छाले हो जाने पर हरे धनिये की पत्तियों को साफ धोकर चबाएं, इससे छाले शीघ्र ठीक हो जाते हैं। हरे धनिये के रस में तिल्ली का तेल मिलाकर मालिश करने से सिरदर्द, हाथ-पैर की जलन और लू की जलन नष्ट होकर मस्तिष्क को तरावट मिलती है।

★ हरे धनिये को आंवले के साथ पीसकर खाने से नेत्र-ज्योति में अभिवृद्धि होती है।

★ हरा धनिया, काला नमक और काली मिर्च को मिलाकर चटनी बनाएं। इसके सेवन से दस्त और कब्ज की शिकायत दूर होती है।

★ मधुमक्खी या बर् के काटने पर हरे धनिये का रस और सिरका मिलाकर काटे हुए स्थान पर लगाएं। तुरन्त आराम मिलेगा।

★ धनिये की पत्तियों का लेप करने से फोड़े की सूजन कम हो जाती है। शरीर पर पित्ती होने पर धनिये की पत्तियों के रस में रोगन गुल व शहद मिलाकर लेप करने से लाभ होता है।



धनिये की चटनी भी स्वादिष्ट बनती है। वजन बढ़ने की समस्या से ग्रस्त व्यक्ति टोस्ट या डबलरोटी पर मक्खन के स्थान पर धनिये की चटनी का इस्तेमाल कर सकते हैं। इससे नाश्ता तो स्वादिष्ट होगा ही साथ ही आप अतिरिक्त कैलोरीज से भी बच सकेंगे। चटनी को और अधिक स्वादिष्ट बनाने के लिए काला नमक काली मिर्च, सेंधा नमक, नींबू के रस आदि का भी उपयोग कर सकते हैं। किन्तु जो व्यक्ति उच्च रक्तचाप से पीड़ित हैं, वह चटनी में अत्यंत अल्प मात्रा में नमक का इस्तेमाल करें क्योंकि अधिक नमक से रक्तचाप बढ़ने का खतरा रहता है।

आयुर्वेद के ग्रंथों में धनिये को ठंडा, कसैला, पित्तनाशक, शूलनाशक, मधुर बताया गया है तथा खांसी, बुखार, उल्टी, प्यास और कब्ज जैसे रोगों का नाशक कहा गया है। धनिया भूख बढ़ाने वाला होता है। सौ ग्राम धनिये की पत्तियों के रस को सब्जी में मिलाकर खाने से शरीर को सभी प्रकार के विटामिन्स उपलब्ध हो जाते हैं।





किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

किट्टी बेटा, टेबल पर खाना
रखा है, चलो खाना खा लो।





हम्म..... यम्मी, मुझे तो रोज़ यही खाना पसंद है माँ।



देखो बेटा घर में बना खाना न खाने का नतीजा, पड़ गई ना अब तुम बीमार।

हाँ मम्मी!!



अब तो तुम्हें हम सबको खाना ही पड़ेगा।

हम सब तो तुम्हारे मित्र हैं, हम तो चाहते हैं कि तुम जल्दी ठीक हो जाओ।

.... पर माँ ने कहा था कि मुझे कई दिनों तक कड़वी दवाइयां खानी पड़ेंगी।



अगर तुम हमारी बात मानोगी तो जल्दी अच्छी हो जाओगी।

पर कैसे?

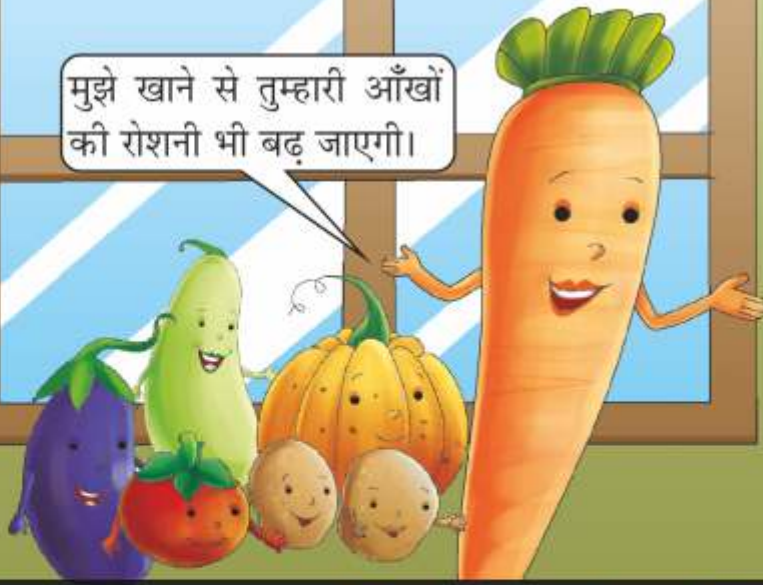


देखो मैं हूँ घीया, विटामिनों की खान और पचने में भी आसान।

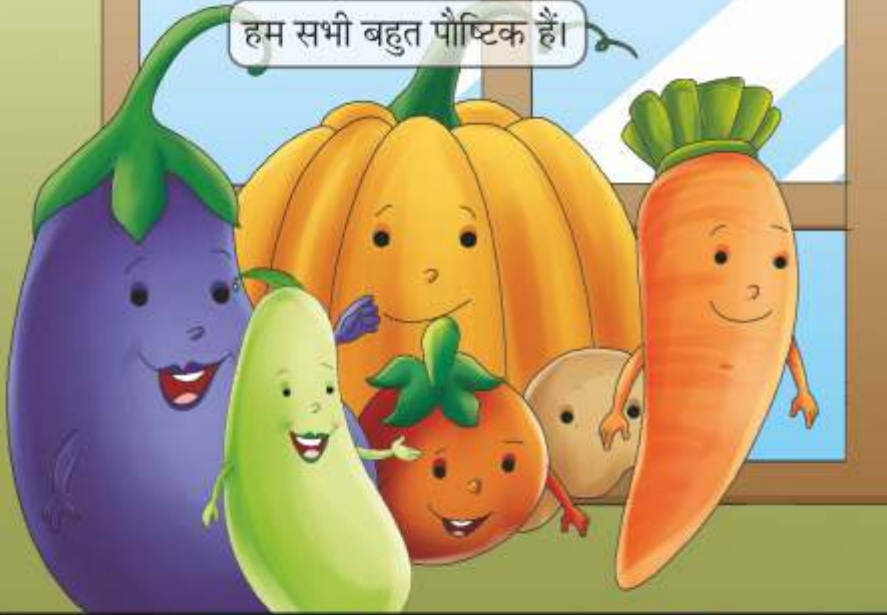
घीया.....?हाँ माँ भी तुम्हारे लिए यही बोलती है।



मुझे खाने से तुम्हारी आँखों की रोशनी भी बढ़ जाएगी।



हम सभी बहुत पौष्टिक हैं।



माँ... मैं आज से सभी सब्जियाँ खाऊँगी और आपको शिकायत का मौका नहीं दूँगी।



कभी न भूलो

- ★ हे परमेश्वर! हमारे मन को शुभ संकल्प वाला बनाओ। हमें सुखदायी बल और कर्म शक्ति प्रदान करो।
– ऋग्वेद
- ★ जिसकी बुद्धि नष्ट हो जाती है, वह मनुष्य सदा पाप ही करता है। केवल पुनः पुनः किया हुआ पुण्य ही बुद्धि को बढ़ाता है।
– वेदव्यास
- ★ अपने अहंकार पर विजय पाना ही प्रभु की सेवा है।
- ★ सत्य को प्रताड़ित किया जा सकता है, परास्त नहीं।
- ★ गलती स्वीकार कर लेना झाड़ू बुहारने के समान है, जिससे गन्दगी का नामोनिशान तक नहीं रहता।
– महात्मा गाँधी
- ★ जिसने मन को जीत लिया उसने जगत को जीत लिया।
– शंकराचार्य
- ★ जहाँ कानून का अन्त होता है वहाँ कुशासन प्रारम्भ होता है।
- ★ वह कौन सा कठिन कार्य है जिसे धैर्यवान मनुष्य सम्पन्न नहीं कर सकता।
– वृहात्कल्प भाष्य
- ★ साधारण लोग अपनी हर बुराई का दोषी दूसरों को ठहराते हैं।
- ★ जिस व्यक्ति को स्वयं पर विश्वास नहीं उसकी असफलता निश्चित है।
- ★ जब हम अच्छा कार्य करते हैं तो शक्ति अपने आप आ जाती है।
- ★ जब क्रोध नम्रता का रूप धारण कर लेता है तो अभिमान भी सिर झुका लेता है।
– सुदर्शन
- ★ विपत्ति में जिसकी बुद्धि कार्यरत रहती है, वही धीर है।
– सोमदेव
- ★ निरन्तर अथक परिश्रम करने वाले भाग्य को भी परास्त कर देंगे।
– तिरुवल्लुर
- ★ मित्रता अवसरवादिता नहीं, वह तो सदा ही एक मधुर उत्तरदायित्व है।
– खलील जिब्रान
- ★ अनुभव प्राप्त करने के लिए बहुत अधिक मूल्य चुकाना होता है।
- ★ प्रत्येक अच्छा कार्य पहले असम्भव नजर आता है।
– कारलाइल
- ★ कोई तलवार इतनी भयानक नहीं जितनी कि जिह्वा।
– सिडनी
- ★ बलवान वही होता है जिसमें आत्मबल होता है।
- ★ क्रोधी मनुष्य राक्षस की तरह भयंकर बन जाता है।
– अज्ञात
- ★ अहंकार के प्रति जो जितना उदासीन होता है उसकी दृष्टि या समझ उतनी ही व्यापक होती है।
– बाल्सन
- ★ ईर्ष्या और अहंकार को तोलिये। मिलजुलकर दूसरों की भलाई के लिए काम करना सीखिए।
– विवेकानन्द

कविता : कमलसिंह चौहान

ठंड की रानी

देखो ठंड की रानी आई,
बगिया अब फूलों से छाई।
चादर ओढ़ के हर कोई बैठा,
सूरज की किरणें शर्माई।।

जले अलाव वहाँ सब बैठे,
सूरज निकला फिर भी लेटे।
स्वेटर शाल की मांग बढ़ी,
ठंडी हवा ने दौड़ लगाई।।

फ्रिज कूलर कोने में दुबके,
सिसक रहे हैं चुपके-चुपके।
ठंड लगी उनको भी भारी,
सोनू ने चादर उढ़ाई।।

घंटी बजी और बच्चे भागे,
इन्हें मौसम का डर न लागे।
सहन करना सीखो इनसे,
घबराओ नहीं ठंड से भाई।।



बाल कविता : अब्दुल मलिक खान

सर्दी आई ...

थर-थर कापें लम्बी रातें,
दिन लगते हैं ज्यों सौगातें।
धूप सुहाई सर्दी आई,
सर्दी आई, ठंडक लाई।।

बारिश ओले ठंडे गोले,
कोहरा ओस बड़ों की धोंसा।
ओढ़ रजाई सर्दी आई,
सर्दी आई, ठंडक लाई।।

गाजर मूली सरसों फूली,
शकरकन्द क्या हलवा थूली।
खाओ भाई सर्दी आई,
सर्दी आई, ठंडक लाई।।



अब वह ऐसा नहीं करेगा

रात के लगभग तीन बजे का समय था। सभी लोग गहरी नींद में सो रहे थे। अचानक अमित चिल्ला उठा— माँ... माँ... बचाओ... मेरे पेट में बहुत तेज दर्द हो रहा है... हाय... माँ...।

उसकी चिल्लाहट से घर के सभी लोग जाग गए। अमित दर्द से बुरी तरह छटपटा रहा था। तभी उसकी दादी ने कमरे से बाहर निकलते हुए कहा— “बहू, जरा हींग गर्म करके इसके पेट में मल दो। अभी दर्द ठीक हो जाएगा।”

दादी की बात सुनकर माँ जल्दी से रसोई में गई और थोड़ी-सी हींग गर्म करके ले आई। फिर दर्द से छटपटा रहे अमित के पेट में गर्म-गर्म रात हींग मलने लगीं। लेकिन इस घरेलू उपचार के बाद भी अमित का दर्द कम नहीं हुआ। सभी लोग यह नहीं समझ पा रहे थे कि अचानक इसे क्या हो गया है। माँ ने सिकाई वाली बोटल में गर्म पानी भरकर उसके पेट की सिकाई की लेकिन उससे भी कोई खास फर्क नहीं पड़ा।

जब सारे उपाय बेकार हो गए तो पापा उसे एक नर्सिंग होम लेकर गए। नर्सिंग होम में डॉक्टर ने उसे लिटाकर उसका पेट देखा। फिर पापा से उन्होंने कहा— इसके पेट में शायद कीड़े हैं।

कीड़ों का नाम सुनते ही अमित की माँ डर गई। लेकिन डॉक्टर ने उन्हें सांत्वना देते हुए कहा कि डरने की कोई बात नहीं है। मैं दवाई दे रहा हूँ। कल तक कीड़े निकल जाने चाहिए। उन्होंने दर्द बंद करने के लिए इंजेक्शन लगाया और कुछ दवाईयाँ दीं। दवाई के असर से कुछ देर बाद अमित का दर्द बंद हो गया।

वास्तव में दूसरे दिन सुबह जब अमित शौचालय से लौटा तो उसने माँ को बताया कि उसके पेट में सफेद रंग के कीड़ों का एक गुच्छा निकला। शाम को जब वह पापा के साथ डॉक्टर साहब के पास गया और कीड़े निकलने वाली बात बताई तो डॉक्टर ने पूछा— तुम कौन-सा खेल खेलते हो?

“क्रिकेट!” उसने तपाक से कहा।

“क्या खेलते समय तुम पैरों में जूते या चप्पल पहने रहते हो?” उन्होंने फिर पूछा।

“जी नहीं, चप्पल या जूते पहनकर मुझे तेजी से दौड़ नहीं मिलता है।” उसने कहा।

“इसी कारण तुम्हारे पेट में कीड़े हैं। अब आगे से तुम जूते या चप्पल पहनकर ही खेलना।” डॉक्टर साहब ने उसकी ओर देखकर मुस्कुराते हुए कहा।

उनकी बात सुनकर अमित को बहुत आश्चर्य हुआ। “भला खेल और कीड़ों का क्या सम्बन्ध?” उसने मन ही मन सोचा।

डॉक्टर साहब ने अमित को इस सोचनीय मुद्रा में देखा तो धीरे से हँसते हुए बोले— “क्या सोच रहे हो?”

“जी... यही कि क्रिकेट का कीड़ों से क्या सम्बन्ध?” उसने कहा।

उसकी जिज्ञासा देखकर डॉक्टर साहब ने उसे बताया— “इन कीड़ों का मिट्टी से सीधा सम्बन्ध है। इन कीड़ों का नाम है ‘ऐस्केरिस’ इनके अंडे गंदी मिट्टी और खेतों आदि में बिखरे रहते हैं। यह अंडे इतने छोटे होते हैं कि हम उन्हें आँखों से नहीं देख सकते। नम मिट्टी में तो ये 5-6 वर्ष तक जीवित रहते हैं।”



जब तुम बिना चप्पल या जूते पहने मिट्टी में खेलते हो, तो ये अंडे तुम्हारे तलवे से होकर खून में मिलकर पेट में पहुँच जाते हैं और आंतों से चिपककर खून चूसते रहते हैं। इसी तरह भोजन करने से पहले यदि हाथों को ठीक से न धोया जाए तो खेलते समय मिट्टी के साथ इनके अंडे नाखूनों और हथेली में चिपक जाते हैं। जो खाने के साथ पेट में पहुँचकर बड़े होकर कीड़ों का रूप धारण कर लेते हैं। कच्ची सब्जियाँ या फल आदि भी यदि बिना धुले ही खा लिए जाते हैं तो उनमें लगी धूल मिट्टी से भी पेट में कीड़ों के अंडे पहुँचते हैं। खुली हुई चाट पकौड़ी तथा अन्य ऐसी प्रदूषित खाद्य वस्तुएं भी कीड़ों के अंडों को पेट में पहुँचाती हैं। कभी-कभी तो व्यक्ति के पेट में इनकी संख्या पांच सौ से पांच हजार तक हो जाती है। इस कारण रोगी के पेट में तेज दर्द होने लगता है। इसके साथ-साथ भूख भी खत्म हो जाती है और दस्त, उल्टी, घबराहट तथा एंठन आदि भी हो सकती है।

कुछ पल रूककर डॉक्टर साहब ने फिर कहा— “जानते हो, हमारे पेट में जो आंतें होती हैं, वे कितनी लम्बी होती होंगी?”

अमित ने कहा— “नहीं, मुझे नहीं मालूम।”

उसकी बात सुनकर डॉक्टर साहब ने कहा— “जितनी लम्बी तुम्हारी माँ की साड़ी होती है, उतनी लम्बी हमारी आंतें होती हैं।

यह सुनकर अमित की आँखें आश्चर्य से फैल गईं। उसके मुँह से अचानक निकल पड़ा— “बाप रे! इतनी लम्बी? माँ की साड़ी तो बहुत लम्बी होती है। फिर इतनी लम्बी आंतें इतने छोटे से पेट में कैसे समा जाती हैं।”

यह सुनकर डॉक्टर साहब बड़े प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए बोले— जिस प्रकार से तुम्हारी माँ की साड़ी तह लगने के बाद बहुत कम जगह में आ जाती है, उसी प्रकार आंतें भी तह लगी हुई होती हैं। इन्हीं आंतों में खाना पचता है। जो आवश्यक

चीजें हमारे शरीर के लिए जरूरी होती हैं। उन्हें आंतों की दीवारों में बने छिद्रों द्वारा सोखकर खून में मिला दिया जाता है, जिससे जरूरी चीजें सारे शरीर को मिल सकें।

“लेकिन यदि ये छिद्र बंद हो जाएं तो क्या होगा?” डॉक्टर साहब ने पूछा।

“तो जो आवश्यक चीजें खाने से हमें प्राप्त होती हैं वे हमारे शरीर को नहीं मिल पाएंगी।” अमित ने कहा।

“बिल्कुल ठीक कहा तुमने! जानते हो, आंतों की दीवारों के छिद्र कैसे बंद होते हैं? जब फास्ट फूड जैसे चाउमीन, बर्गर और मैदे से बनी अन्य चीजें जब हम अधिकता से खाते हैं तो ये हमारी आंतों की दीवारों में चिपककर आंतों के छिद्रों को बंद कर देती हैं। जिससे हमारी पाचनक्रिया खराब रहने लगती है। लम्बे समय तक पाचनक्रिया के खराब रहने के कारण पेट में गैस, कब्ज आदि बीमारियां लग जाती हैं।” डॉक्टर साहब ने कहा।

“बाप रे! चाउमीन से इतनी भयंकर बीमारियां हो सकती हैं, यह तो मैंने सोचा ही नहीं था।” अमित ने आँखें फैलाते हुए कहा।

फिर कुछ सोचता हुआ बोला— “जिन लोगों को ये बीमारियां हो जाती हैं, उन्हें खूब कड़वी दवाईयां खानी पड़ती होंगी और ‘इंजेक्शन’ भी लगवाने पड़ते होंगे?”



“हाँ, सही कहा तुमने।” डॉक्टर साहब ने कहा।

डॉक्टर साहब की बातें सुनकर अमित हैरान रह गया। उसने मन ही मन प्रण किया कि अब वह फास्ट फूड खाने की जिद माँ से नहीं करेगा। हमेशा खेलते समय चप्पल या जूते अवश्य पहने रहेगा। खाना खाने से पहले हाथों की सफाई अच्छी तरह साबुन से धोकर करेगा। अभी तक वह भी स्कूल में खाने की छुट्टी के समय स्कूल के बाहर खड़े चाट के ठेलों पर से खुली हुई चाट पकौड़ियाँ खाता था। पापा जब फल लाते थे तो वह उन्हें बिना धोए ही खाने लगता था। लेकिन अब वह आगे से ऐसा कुछ भी नहीं करेगा और अपने दोस्तों को भी ऐसा करने से मना करेगा।

इसी सुखद संकल्प के साथ उसने डॉक्टर साहब से नमस्ते की और पापा के साथ घर की ओर चल पड़ा।

जेब्रा

यद्यपि जेब्रा घोड़ा परिवार का सदस्य है किन्तु वह अपने शरीर पर बनी धारियों के कारण अपनी अलग पहचान रखता है।

एक जेब्रे की धारियों का पैटर्न दूसरे जेब्रे की धारियों से सर्वथा भिन्न होता है। जेब्रा के शरीर में पेट के अलावा सभी स्थानों पर काली सफेद पट्टियां या धारियां होती हैं। यहाँ तक कि उसकी गर्दन के बालों में भी ये पट्टियां होती हैं। नवजात शिशु की धारियां भूरे रंग की होती हैं।

जेब्रा की धारियां ही उसका सुरक्षा कवच है। शेर इनका सबसे बड़ा दुश्मन है। जब जेब्रा समूह में रहते हैं तो शेर के लिए किसी एक जेब्रा को निशाना बनाना बड़ा मुश्किल है क्योंकि इन धारियों की वजह से उसकी आँखें चौंधियां जाती हैं। इसके अलावा झुंड में शामिल जेब्राओं की धारियां आपस में घालमेल कर देती हैं जिसकी वजह से शेर को किसी एक जेब्रा के सिर, पैर का पता नहीं चल पाता।

जेब्रा की धारियां उन्हें अपने झुंड की पहचान कराती हैं। इन्हीं के कारण झुंड के सदस्य एक-दूसरे को पहचानते हैं। आमतौर पर इनके झुंड में 16 से 20 सदस्य होते हैं।

वैसे तो जेब्रा झुंड में ही रहते हैं लेकिन कभी-कभी वयस्क नर स्वतंत्र रूप से भी विचरण करते हैं। इसके अलावा कभी-कभी झुंड का कोई सदस्य रास्ता भटक जाता है या खो जाता है तो ऐसे में झुंड के सदस्य उसे खोजते हैं।

जेब्राओं में भाईचारा भी बहुत होता है। यही कारण है कि जब चारा प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होता है तो वहाँ इनके अनेक झुंड एकत्रित होकर उसे चरते हैं।

इनके झुंड दो तरह के होते हैं। एक झुंड में अवयस्क नर होते हैं। जबकि दूसरे झुंड में एक वयस्क नर तथा उसके साथ 6 से 8 मादाएं तथा उनके बच्चे होते हैं। झुंड

का सरदार बदलता रहता है। ऐसा तब होता है जब झुंड का मुखिया या तो बूढ़ा हो जाता है या फिर कोई दूसरे झुंड का नर उसे खदेड़ देता है। ऐसे में विजेता जेब्रा पराजित झुंड पर अपना अधिकार जमा लेता है।



जेब्राओं के झुंड की अपनी एक खासियत होती है। जब वे भोजन पानी की खोज में निकलते हैं तो मुख्य मादा झुंड के आगे चलती है तथा नर सबसे पीछे होते हैं। मादा के साथ उसके बच्चे होते हैं। अपने झुंड की रक्षा करने के लिए नर सतर्क होकर चलता है ताकि कोई शत्रु झुंड पर हमला न करे।

जेब्रा काफी ताकतवर प्राणी है। संकट के समय वे सामूहिक रूप से शत्रु का मुकाबला करते हैं। दुलती मारकर अथवा काटकर वह अपने शत्रु से लोहा लेता है।

किसी समय जेब्रा की चार प्रजातियां थीं लेकिन आज इनकी तीन प्रजातियां ही बची हैं। सामान्य रूप से पाई जाने वाली प्रजाति इक्वस क्वैगर है जिसे मैदानी जेब्रा भी कहा जाता है। यह प्रजाति इथियोपिया के दक्षिण में मिलती है इक्वस ग्रेवी नामक दूसरी प्रजाति सोमालिया में पाई जाती है। तीसरी जाति को इक्वस जेब्रा या पहाड़ी जेब्रा कहते हैं। यह नामीबिया की पहाड़ियों में पाया जाता है। चौथी प्रजाति जो लुप्त हो चुकी है, का नाम क्वागा था। प्रजातियों के अनुसार इनके रंगरूप में थोड़ी भिन्नता होती है जो इन्हें दूसरी प्रजाति से अलग करती है।

जेब्रा तेज दौड़ने में भी माहिर होते हैं। इनकी गति 50 किलोमीटर प्रतिघंटा होती है। इनकी टांगें काफी लम्बी होती हैं जिनकी मदद से ये न केवल तेज दौड़ पाते हैं अपितु लम्बी-लम्बी छलांग भी लगाते हैं।

घोड़े या गधे की भांति जेब्रा को पालतू नहीं बनाया जा सकता। जंगल ही उन्हें अच्छा लगता है। इन्हें चिड़ियाघर में भी देखा जा सकता है।



पढ़ो और हँसो

एक आदमी के सिर से खून निकल रहा था।
वह डॉक्टर के पास पहुँचा तो डॉक्टर ने पूछा— ये कैसे हुआ?

आदमी बोला— डॉक्टर साहब! मैं हथौड़े से पत्थर तोड़ रहा था। तभी मेरी पत्नी ने कहा— “कभी तो अपना दिमाग इस्तेमाल किया करो।”



मेहमान : बेटा, तुम्हारा जन्म किस दिन हुआ था?

बच्चा : शुक्रवार को। और आपका?

मेहमान : संडे को।

बच्चा : झूठ संडे को तो छुट्टी होती है।



पिता : तुम्हारी क्लास में सबसे मेहनती बच्चा कौन है?

बेटा : जी, मैं हूँ।

पिता : वो कैसे?

बेटा : जब सारे बच्चे बेंच पर बैठे रहते हैं, उस समय मैं बेंच पर खड़ा रहता हूँ।



पिटू : मम्मी मुझे खांसी की दवा दो।

मम्मी : बेटा, तुझे क्या करना है?

पिटू : मम्मी टेपरिकॉर्डर में खर्र-खर्र की आवाज निकल रही है, इसीलिए मुझे उसमें थोड़ा डालना है।

— विकास कुमार (बछवाड़ा, बेगूसराय)

मम्मी : बबलू, तुम आज स्कूल से जल्दी क्यों आ गये?

बबलू : मम्मी, मेरा गबरू के साथ झगड़ा हो गया और सर ने मुझे क्लास से बाहर निकाल दिया।

मम्मी : लेकिन तूने गबरू के साथ झगड़ा क्यों किया?

बबलू : मुझे आज जल्दी घर आना था इसीलिए।



एक कैदी दूसरे कैदी से बोला— कोई तुमसे मिलने क्यों नहीं आता?

दूसरा कैदी बोला— रिश्तेदार तो बहुत सारे हैं लेकिन सभी यहाँ जेल में ही हैं।



विद्यार्थी : सर, हम कुछ भी न करें तो क्या आप हमें दण्डित करोगे?

सर : नहीं।

विद्यार्थी : तब तो ठीक है, आज मैंने होमवर्क नहीं किया।

— आजाद कुमार (बड़ौदा)



राजू ड्राइंगरूम में बैठकर 'ड्राइंग' बना रहा था। उसकी मम्मी ने गुस्से में आकर राजू से कहा— ये जगह ड्राइंग (चित्र) बनाने की नहीं हैं?

राजू बोला— मम्मी जी ये ड्राइंगरूम है इसीलिए तो मैं यहाँ ड्राइंग कर रहा हूँ।



बच्चे ने अपने पिताजी से पूछा— पिताजी! क्या आप आँख बन्द करके 'साइन' कर सकते हैं? पिताजी बोले— हाँ, क्यों नहीं। एकदम आसानी से कर सकता हूँ।

बच्चा : तो फिर आप मेरे 'रिपोर्ट कार्ड' पर आँख बन्द करके 'साइन' कर दीजिये।

— सत्यम, संकेत (दाहोद)



अध्यापक एक छोटे बच्चे से बार-बार पूछ रहे थे— पानीपत की लड़ाई किसने लड़ी थी?

बार-बार पूछने पर भी लड़का कुछ नहीं बोला। मास्टर जी ने उसे डांटा तो लड़का रोते हुए बोला— सर! मैं सच कहता हूँ मैंने नहीं लड़ी थी।



इंस्पैक्टर : बंटी, तुम्हारी जो भैंस खोई है उसकी कोई निशानी बताओ।

बंटी : इंस्पैक्टर साहब, वह थोड़ी-थोड़ी देर में पूँछ हिलाती है।

— ज्योति बतरा (रोहतक)

पुत्र : (नेता पापा से) पापा अगर आपकी पार्टी का कोई आदमी दूसरी पार्टी में मिल जाये तो उसको आप क्या कहेंगे?

नेता : गद्दारी।

पुत्र : और दूसरी पार्टी का आदमी आपकी पार्टी में आ जाये तो?

नेता : हृदय परिवर्तन।



मित्र : कल रात स्वप्न में देखा कि मैंने एक नये आकार के नाशते का आविष्कार किया है और मैं उसे चख ही रहा था कि...

साथी : हाँ, हाँ आगे कहो।

मित्र : मेरी नींद खुल गई और मैंने देखा कि चटाई का एक कोना गायब है।



अखबार वाला लड़का जोर-जोर से सड़क पर चिल्लाता हुआ जा रहा था, 'आज की ताजा खबर! एक छोटे से झूठ ने 125 लोगों को बेवकूफ बनाया।'

राहगीर : एक अखबार देना।

अखबार देकर अखबार वाला लड़का आगे बढ़ गया और फिर चिल्लाया— एक छोटे से झूठ ने 126 लोगों को बेवकूफ बनाया।

— दीपक कुकरेजा (वडसा)

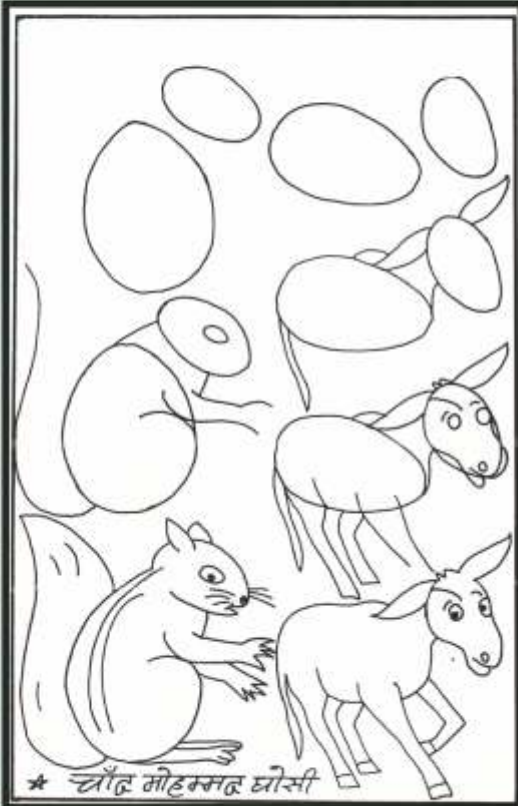
दो बाल क्षणिकाएं : राजेंद्र निशेश

गोरी-गोरी धूप

उड़न खटोला,
सूरज का डोला।
चाँद के साथी,
तारे बने हाथी।
मुर्गे की बांग,
दिया सूरज टांग।
गोरी-गोरी धूप,
कैसा निखरा रूप।

चित्र बनाना सीखें

अण्डों की मदद से गिलहरी व गधे का चित्र बनाना सीखो व अपने मित्रों को भी सीखाओ।



★ चौद मोहम्मद घोसी

चाँद

गुनगुनाया



कोहरा छाया,
सर्दी लाया।
धूप ने आकर,
कर्ज चुकाया॥

सिर पर टोपी,
भालू ने गाया।
कौवे ने आकर,
शोर मचाया॥

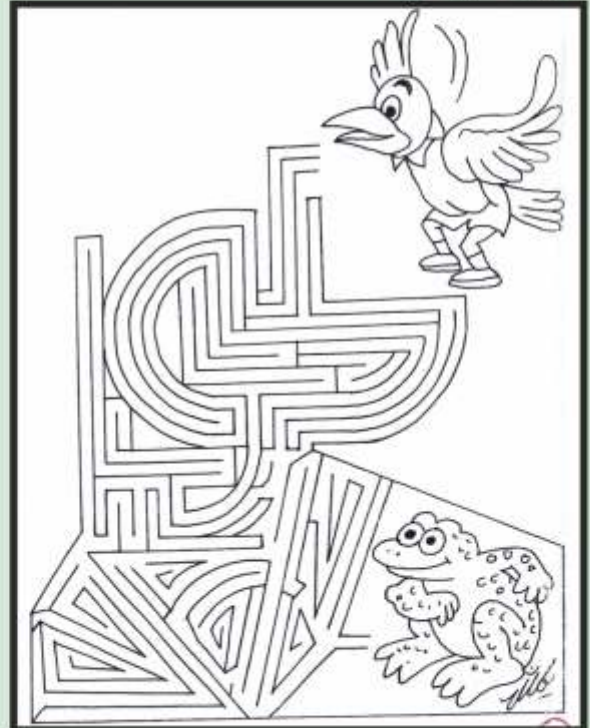
चाट-पकौड़ा,
सभी को भाया।
आ री निंदिया,
चाँद गुनगुनाया।

प्रस्तुति : राजेंद्र निशेश

रास्ता बताइए

तोताराम और मेंढक राम वन महोत्सव से वापस लौटते समय बिछुड़ गए हैं, अब दोनों मित्रों को सही रास्ते द्वारा वापस मिलाइए।

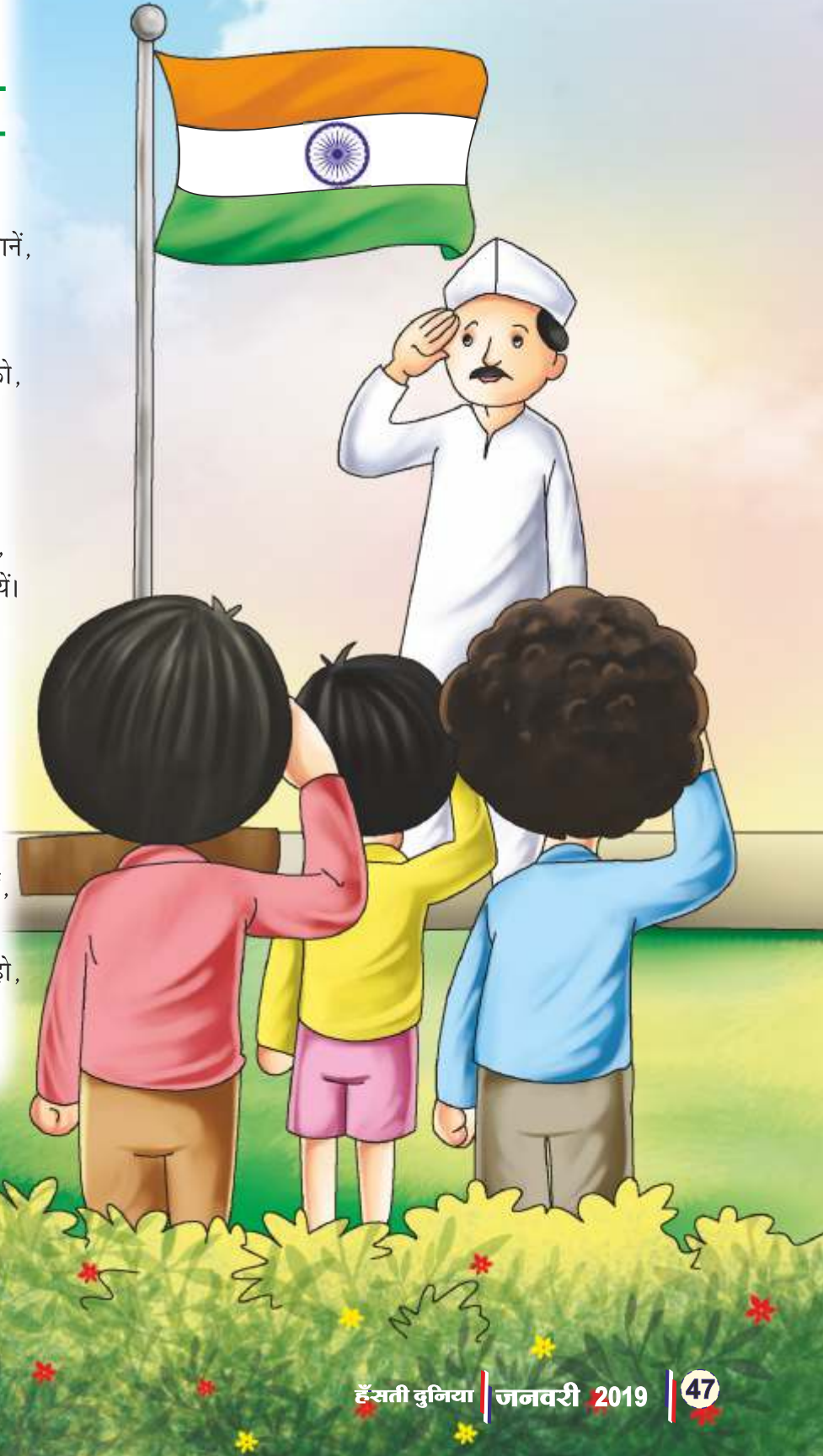
-चाँद मोहम्मद घोसी



कविता : मोती 'विमल'

गणतन्त्र दिवस

जीने का हो एक मन्त्र,
राष्ट्र हमारा रहे स्वतन्त्र।
गणतन्त्र दिवस को पहचानें,
महत्ता इसकी हम जानें,
याद करें कुर्बानी को,
देश हित मिटी जवानी को,
अमर रहे ये गणतन्त्र...
हर वर्ष मनायें ऐसे पर्व,
करें निरन्तर जिस पे गर्व,
घर-घर हर बच्चा हर्षाये,
पुलकित होकर पर्व मनायें।
सफल तभी हो जनतन्त्र...
राष्ट्र ध्वज को फहरायें,
नील गगन में लहरायें,
नमन करें शहीदों को,
रखें दूर विवादों को।
सच्चा होगा लोकतन्त्र...
मिल सभी जन काम करें,
आजादी हित त्याग करें,
जन-जन की भागीदारी हो,
सबकी जिम्मेदारी हो।
राम राज्य हो प्रजातन्त्र...



नवम्बर अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र



लवलीन आहूजा 13 वर्ष
म.नं. 1409/3, फ़ेस-11,
मोहाली (पंजाब)



खुशी वधवा 10 वर्ष
अशोक विहार, नूरमहल रोड,
नकोदर, जिला : जालंधर (पंजाब)



तरेश किरार 13 वर्ष
बी-137/14, अमृतपुरी,
गढ़ी, दिल्ली



प्रेमप्रकाश गढ़वाल 13 वर्ष
वाल्मीकि बस्ती, वार्ड नं. 381,
सरदारशहर, जिला : चुरु (राज.)



समीक्षा मेहरा 12 वर्ष
1185/13, एच.एम.टी. कॉलोनी,
सुन्दर नगर, अजमेर (राज.)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों
को पसंद किया गया वे हैं—

समदिशा, ईशाना

(निरंकारी कालोनी, दिल्ली),

सेफाली (सुरैला), सुगन्धी (झड़ौदा),

वेदांत मौर्य (ठाणे), पल्लवी (श्रीगंगानगर),

अनिल अनुरागी, सुमित तिवारी

(सूपा, महोबा),

रूबी वर्मा (यशोदा नगर, महोबा),

अग्रिमा विश्वकर्मा (महोबा),

भूमिका कर्दम (कोसीकलां),

वैभव किशोर (डाँगोली बाँगर),

तान्या (आगरा), तेजस्विनी (कानपुर),

आश्रित (कटुआ), निहारिका (मोहाली),

दिव्यम (अम्बाला),

शिवनारायण (जालंधर कैंट),

समदिशा, हरमन, अंजलि, जैसमिन, नेहा,

अक्षित, समीर, शिवानी, वंश, यक्षिका,

खुशी, अदीति, साहिल, आरुषि, जैसमिन,

पुष्पित, अनमोल, साहिल, सिमरन, सेहज

(भटिण्डा)।

जनवरी अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर 20 जनवरी तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 को भेज दें। पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) मार्च 2019 अंक में प्रकाशित किये जाएंगे। चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें। 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

रंग भारो



जव वर्षा मंगलमाय हौ

नाम आयु

पुत्र/पुत्री

पूरा पता

.....

.....पिन कोड

आपके पत्र मिले



हँसती दुनिया का अक्टूबर अंक पढ़ा। बहुत ही बोधगम्य लगा।

हँसती दुनिया में कहानियां एवं प्रेरक-प्रसंग बहुत ही शिक्षाप्रद होते हैं। बाल-मन पर इनका अच्छा प्रभाव पड़ता है।

बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए यह पत्रिका सचमुच सुनहरा पथ है।

- अंबले बाबूरात (कर्नाटक)

मैं हँसती दुनिया की सदस्य हूँ। मुझे हर महीने इस पत्रिका का बेसब्री से इन्तजार रहता है। हँसती दुनिया वास्तव में सबको हँसाने का काम करती है। इसकी कहानियां शिक्षाप्रद होती हैं जो हमें ज्ञान देती हैं और हमें अच्छाई की राह में चलना सिखाती है।

मेरी प्रभु से यही प्रार्थना है कि यह पत्रिका दिन दुगुनी रात चौगुनी तरक्की करे।

- ऋचा गोयल (दिल्ली)

हँसती दुनिया बहुत ही अच्छी और प्यारी पत्रिका है। इससे हमें समयानुकूल शिक्षाप्रद और नई-नई जानकारी तथा बहुत कुछ सीखने को मिलता है।

- पुनिता सिंह (मुंबई)

मैं हँसती दुनिया मासिक की नियमित पाठक हूँ। हँसती दुनिया का नवम्बर अंक मिला। यह अंक भी अन्य अंकों की तरह ज्ञानवर्द्धक व मनोरंजक था।

इसमें प्रकाशित सभी कहानियां, कविताएं व लेख बहुत शिक्षाप्रद व मनोरंजक थे।

स्तम्भों में 'अनमोल वचन' एवं 'कभी न भूलो' भी शिक्षाप्रद होते हैं।

पढ़ो और हँसो भी अच्छे लगे।

- आस्था (त्रिनगर, दिल्ली)

नववर्ष की बधाई

सूरज बाबा हुए नरम,
कपड़े पहनो गरम गरम।
मौज मस्ती संग लिए,
सर्दी का आया मौसम॥

कुहासे की चादर लपेटे,
दिख रही नदियां सड़कों।
ठण्ड से थर्र थर्र कांप रही,
बुढ़िया दादी देखो कब से॥

सुबह की गुनगुनी धूप आयी,
आंखें खोलो छोड़ो रजाई।
करो कसरत खेलो कूदो,
बच्चों मन से करो पढ़ाई॥

मुर्गे ने है बाग लगाई,
मीठे सपनों को दो विदाई।
यह साल चला हुआ देकर,
नववर्ष की तुम्हें बधाई॥

- मीरा सिंह 'मीरा'

समय के साथ

समय के साथ तुम चलना सीखो,
समय के साथ जीवन जीना सीखो।
समय के साथ उठना-बैठना सीखो,
समय के बोल तुम पढ़ना सीखो।
समय के साथ सोना-जागना सीखो,
समय का मोल सबको बताना सीखो।

- श्याम बिल्दानी
(बड़नेरा)



Spiritual Zone for kids



With the blessings of His Holiness Experience online spiritual learning with exciting and fun features highlights our mission's message. Visit regularly to watch tiny tots excelling in the spiritual journey.

kids.nirankari.org

- His Holiness Message
- Glimpse of Blessing
- Message in colors
- Poetry Fantasy
- Wacky and True
- Fun Games
- Hansti Duniya
- Kids Creation
- Kids Activities
- Jokes
- Avtar Vani
- Story Time

Share
your talent
in form of
painting, poetry
& story



Registered with the
Registrar of Newspaper
For India Under RNI No. 25672/73

Delhi Postal Regd. No. G-3/DL(N)/136/2018-20
Licence No. U (DN)-23/2018-20
Licenced to post without Pre-payment



निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं!

हँसती दुनिया

(चार भाषाओं में)

सन्त निरंकारी

(ग्यारह भाषाओं में)

एक नज़र

(तीन भाषाओं में)

'सन्त निरंकारी', 'हँसती दुनिया' (हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी) एवं 'एक नज़र' (हिन्दी/पंजाबी) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें
पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009

Ph. 011-47660200, E-mail : patrika@nirankari.org

सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र (मराठी) व सन्त निरंकारी (नेपाली) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

Sant Nirankari Satsang Bhawan

1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI - 400 014 (Mah.)

e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org

अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं की सदस्यता के लिए निम्नानुसार सम्पर्क करें

TAMIL

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
#7, Govindan Street,
Ayavoo Naidu Colony, Aminji Karai,
CHENNAI-600 029 (T.N.)
Ph. 044-23740830

ORIYA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
Kazidiha, Post : Madhupatna,
CUTTACK-753 010 (Orissa)
Ph. 0671-2341250

TELUGU

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
No. 6-2-970, Khairtabad,
HYDERABAD- Pin : 500 029 (TS)
Ph. 040-23317679

GUJRATI

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
1st Floor, 50, Morbag Road,
Naigaon, Dadar (E)
MUMBAI - 400 014 (Mah.)
Ph. 22-24102047

KANNADA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
88, Rattanvillas Road,
Southend Circle, Basavangudi,
BENGALURU-560 023 (Karnataka)
Ph. 080-26577212

BANGLA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
884, G.T. Road, Laxmipur-2
East Bardhaman—713101
Ph. 0342-2657219

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Posted at NDPSO, Prescribed dates 21th & 22nd., Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)